

ST. JOSEPH'S COLLEGE, NAINI TAL -- CONDUCTED BY THE CHRISTIAN BROTHERS



# *College Review 1969*

# CONTENTS

	Page
Dedication	4
Mahatma Gandhi	6
Staff 1969	8
Day by Day at S.J.C. 1969	10
Our Photographs	17
Closes 1969	19
Dr. Zakir Husain	31
Rev. Brother E. Ferdinand Clancy	37
Gandhi Centenary Entertainment	41
Teachers' Day in Sem	47
The Dance Troupe of the International Centre for Kathakali	49
Boy Scouts at S.J.C.	51
Annual Sports at St. Joseph's	53
Table Tennis in Sem	59
Autumn Table Tennis Tournament	65
Summer Tournament	66
Our Billiards	67
The Elocution Contest - Senior Section	68
Swimming 1969	73
Tennis	74
Boating	77
Our House Captains	78
Our Retreat - by Class XI	81
Spiritual Milestones	84
I.S.C. Results 1968	86
Footprints on the Moon - Apollo 11	87
Indian Everest Expedition 1965	90
The Function and need for Arts	94
Archbishop Angelo Poli	97
सावित्री सोह	99
समय की सरसा	101
सालाना सांघी साल के राष्ट्रविश्व कभी बदलते हैं ?	103
Prize Distribution	104
Old Boys Section - 1969	107
Towers of S.J.C.	116
Distinguished Visitors to S.J.C. in 1969	117
List of Donors 1969	118

## JUNE

- 1st. Rev. Fr. Lobo C.S.S.R. arrived to give the Catholic boys their retreat talks.
- 5th. Retreat holiday. The Senior Section of the School went to Sherwood to witness their search light devil display after dinner.
- 8th. Fete at the Flats in aid of the disabled children in the district. The Chief Minister of U.P. opened the Fete.
- 10th. Gandhian concert for All Saints' and Convent girls.
- 12th. Concert for the public.
- 19th. Football match Staff vs boys.
- 23rd. Mr. B.R. Pant who has completed sixty years retired today.
- 26th. Almost all the holiday Brothers have gone back to the plains.
- 27th. His Lordship the Bishop of Lucknow gave Holy Communion to five boys in the College Chapel where he said Mass.

## JULY

- 1st. A tree planting ceremony took place at Hanumangadh this evening. There was a big crowd in attendance.
- 13th. Confirmation at St. Mary's Convent.
- 14th. Mid-Term Examinations start today.
- 15th. Rev. Fr. S. Matthias our new Chaplain said Mass today. He replaces Rev. Fr. Rego who has been appointed Parish Priest. We congratulate Rev. Fr. Rego on his appointment and wish him every success in his arduous task.
- 20th. Great excitement at Apollo 11 moves towards the Moon.
- 21st. At 1.47 a.m. the "Eagle" landed on the Moon. At 8.32 a.m. Armstrong stepped on the Moon surface. Certainly it is a great day for mankind. Dr. Pakenham arrived this afternoon from his holiday in Ireland looking really fit and ready for any assignment.
- 31st. Rev. Dr. A. A. Lofus Superior General of the Christian Brothers visited St. Joseph's today along with Dr. E.X. Leonard, Provincial of the Christian Brothers in India and Dr. Foley. The boys lined the avenue up to the College and clapped and cheered the guests. Later the Superior General spoke to the boys assembled in the hall.

## महात्मा गाँधी भारत के राष्ट्रपिता क्यों कहलाते हैं ?

असंख्य बार विजय प्राप्त हो गई। अहिंसा का धर्म फैलने लगा। लुब्धा-लून का भेद-भाव मिट गया, परन्तु यह किसके प्रयासों का फल था ? किसने इस विषय पर संसार में नव रश्मि प्रसारित की ? यह कौन सी असीम शक्ति थी जिसने लून-खलून के भेद-भाव की खाई को बाटा ? यह मनुष्य कोई और नहीं, सत्य के गुमारी, अपनी लगन के पक्के महात्मा गाँधी ही थे। परन्तु क्या कारण था कि असंख्य मनुष्यों में से वे ही राष्ट्रपिता कहलाये ? वे इतने विख्यात क्यों थे ?

चाहूँ यदि चाहते तो बहुत बनबान बन सकते थे। परन्तु वे धलीपौति समझते थे कि अधिक पैसा पापों की तक नहीं तो खीर क्या है। इतको प्राप्ति कर मनुष्य सोधी, सोचा खीर पानी बन जाता है। इस लिए गाँधी जी थे, जो भी उनके पास धन था, सब मानव के हित के लिए चर्चित कर दिया और वे स्वतन्त्रता संग्राम में कुछ नई। उनके कानों में एक आवाज गूँत रही थी, "तुम्हें ज्ञानव की रक्षा करनी है - - तुम्हें मानव को स्वतंत्र बराना ही पड़ेगा !" जब भी वे सुझाते, नई आवाज फिर गूँतने लगती और वे फिर वही लगन से कानों में सुन जाते।

अहिंसा द्वारा स्वतन्त्रता—असम्भव। लोगों ने सोचा क्या लेकिन बिना हथियार प्रयोग के विजयी हो सकता था ? असम्भव। तो क्या गाँधी जी अहिंसा द्वारा स्वतन्त्रता पा सकते हैं ? नहीं। परन्तु, यह विचार गलत था। उन्होंने जिम्मा अन्ध-राज के ही स्वतन्त्रता संग्राम दे दिया। वे विजयी भी हुए और संसार के लोग यह देख कर आश्चर्य पकित हो गये। संसार में वे एक अनोखा कदाहरण खोज गये। इस कलु युग में निहत्थे अहिंसा के माध्यम से—स्वतन्त्रता संग्राम का द्वार खोलने का जैव उन्ही को है। यह मनुष्य देवता न नहीं, देवता के मुख्य अवयव था।

अपनी विचारधारा, सदाचार, विषयेम व सरल स्वभाव के द्वारा बापू ने केवल भारतीयों का ही नहीं, अविश्व विदेशियों का भी मन मोह लिया था। चाहे वह विवेक हो वा धनवान पर वे उनके आकर्षण का कैन्ट बन गये थे। आहूँ की दृष्टीय दरा ने उनको अपनी ओर खींचा। उन्होंने इस वर्ग को सामाजिक रोषण से बचाने के प्रयत्न किये और समाज में उन्हें उचित स्थान दितावा, उन्हें धार्मिक न्याय दिखवाया।

भारत एक कैसीहर देश है। अंग्रेजों के कमरतोड़ टैक्सों से जन-साधारण दिलमिला पड़ा। कारखानों का मुकाबला लाठियों से करना असम्भव था। शाहील पसीने से लबपय पूरी लगन से कार्य करते थे। परन्तु सब विफल। नई पानी की बमों की तो नई खाद थी, और उसके ऊपर टैक्स। उस सन ने किसानों को महाका का बीड़ा दटाया। उस सन को ईश्वर ने भेजा था। दुखों के दुख दूर करना उसने अपना कर्तव्य माना।



लोरी की लाटियाँ खाईं और जेल में जाना काट बांटे। हमने अहिंसा द्वारा विजय वाले की कोशिश को ही खोजी में दिया से जबाब दिया। गांधी जी ने फिर भी अहिंसा व शान्ति से काम किया और अन्त में विजयी हुए। कुछ ठेकर रह कर दिये गये। ग्रामीण जनता को राजत मिली। अहिंसा द्वारा एक विजय। उन्होंने बाबूजी की कुतोर उल्लोमी की ओर देखित किया और मशीन के कपड़े का बहिष्कार कर अपने चर्ले से अपनी आवश्यकता का मूल काटकर अपने लिए कपड़े बनाने पर जोर दिया। छोटी विजय प्राप्त होने ही बड़ी विजय साबने दिखई देने लगती है।

एक समय का जब भारत की जनता गांधी जी की हथेली में थी। यदि गांधी जी अमेरिका के विरुद्ध हिंसा द्वारा लड़ने की कहते तो भारत शायद उल्टा ही स्वतन्त्र हो जाता। हिन्दु गांधी जी एक ही नदियाँ नहीं बहाना चाहते थे। उन्होंने ऐसे से काम किया। अमेरिका के विरुद्ध लड़ने के लिए वे कई बार जेल गये। परन्तु स्वतन्त्रता के मार्ग से न हटे। धीरे-धीरे विजय का मार्ग सामने लहर आने लगा जब गोरे उनसे दूरले लगे। यह कील का काटकर था जो अहिंसा द्वारा विजय प्राप्त कर रहा था। अमेरिका ने गांधी जी को जेल में रखना उचित समझा, परन्तु इसमें भी वे हार गये। गांधी जी का जीवन मूल्यवान था। इसलिए उन्होंने मूल हस्तार शुरू कर दी। उन्होंने बताया कि यदि उनकी मृत्यु हो गई तो अमेरिका का बहिष्कृत अन्वकार मज हो जायेगा। अब तो वे और भी दूर गए। गांधी जी को जेल में रखे दो मुनिवत और छोड़ दें तो भी मुसीबत। उन्होंने गांधी जी को छोड़ना ही उचित समझा। भारतीयों के लिए एक और विजय।

गांधी जी सारा खाना खाते थे, खादी की पोछी पहनते थे और सरदार का जीवन स्वकीय करते थे। वे बीसवीं शताब्दी के देवता, गरीबों के मित्र और दरिद्रों के भाई थे। उन्होंने सब व मन पर विजय प्राप्त कर ली थी।

कम जमीन भी बचाओ। भारत अपनी भी स्वतन्त्र नहीं हुआ था। गांधी जी की पुकार पर अपनी गरीब सभी उनके साथ हो लिये। अहिंसा द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त करना कोई सरल काम नहीं था, हिन्दु गांधी जी के प्रकल्प चलते रहे। अमेरिका के देर उल्टे लगे। ब्रिटिश राज्य को दानवी शक्ति थीर-ध कीने के समान होने लगी और तब आया फन्दू आगला उल्लोमी सी मिलालोम। भारत स्वतन्त्र हो गया। अहिंसा ने हिंसा पर विजय प्राप्त कर ली। स्वयं ने—असरव पर।

भारत स्वतन्त्र हुआ और इसके कुछ समय बाद ईरान में इस महापुरुष को आपस बुला लिया। भारतीय जनता फिर शोक में लगी हुई हो गई। उजाला देने वाला एक दीपक बुझ गया।

वापू की विचारधारा उनकी लाहरी और पलक परिय मेसा पवित्र था कि लोग उनकी ओर लगे ही आकर्षित हो लगे थे। उनका समय पर असमर्थ विराम था। उनका अहिंसा का धर्म और भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के शास्त्र प्रवरन कुछ ऐसे कार्य हैं जिनसे वे राष्ट्रपिता कहाने के लक्ष्ये दृष्टकार हैं।

# Prize Distribution

## GROUP ONE

<i>Class</i>	<i>General Proficiency</i>	<i>Moral Science</i>	<i>Christian Doctrine</i>
II	A.B. Bhattacharjee J.S. Rawat Samuel Haqq	A. Sah	P. Nclappana
III A	P.R. Choudhury Sunil Sahay O. Var	R. Reddy	M. Mundeiro
III B	L.K. Dar B.K. Pande A. Mehra	D. Dns	—
IV A	G. Jaisingham V. Makar Sanjay Kumar	A. Gupta	L. Patterson
IV B	S. Chandra J. Mathur R. Singh	R. Singh	—
V A	L. Mascarenhas G. Singh P. Barra	P. Kerschella	L. Mascarenhas
V B	A. Sah A. Chandra A. Joshi	N. Joshi	—

## Higher Hindi

P. Jindal

## Field Prizes

5th Football — Peter's  
5th Hockey — Paul's

4th Football — Paul's  
4th Hockey — Prachi'

## 6th Field-Eleven Best :

S. Lakhtia; V. Varma; A. Michrota;  
S. Sahay; A. Swarup; A. Gupta; K. Lal;  
A. Mehra; P. Swarup; P. Rantela; P. Rana.

## GROUP TWO

<i>Class</i>	<i>General Proficiency</i>	<i>Moral Science</i>	<i>Christian Doctrine</i>
VIA	A. Shah M.S. Bhandari H.R. Kishore	A. Shah	K. King
VIB	S. Joshi G. Saxena V. Sharma	V. Sharma	—
VII A	M. Virmani G. Pant B. Bisht	Shishir Rana	—
VII B	R. Kansal S. Kalra A. Khanna	A. Agarwal	—
VIII	H V. Chopra R. Kochak A. Mehra	A. Mehra	
IX	S. Chatterji S. Goel R. Basbir	R. Basbir	
X	R. Sonmal V. Sharma M. Rochlani	R. Sonmal	—
IX	Q. Rchmani S. Hazarji M. Bagg	S. Choudhury	—

### Higher Hindi

Middle	S. Kant
Seniors	S. Singh

### Lower Hindi

G. Pant
S. Hazarji

### Art & Craft

Juniors	V. Figueiredo	Senior	V. Das
---------	---------------	--------	--------

### Dramatics

*H. Devadani & M. Pandey*

(Special Prizes Presented by Dna & Co.)

H. Bavandani — S. Prakash — B. Jacobs — S. Banerji — M. Bugg

### Music Lloyd Buck Prize

M. Bugg

### Science

Junior : S. Chatterji Senior Q. Rehmani

### Field Prizes

	Football		Hockey	
3rd.	Paul's	} Shield St. Paul's	Patrick's	} Shield St. Paul's
2nd.	Paul's		—	
1st.	Patrick's		Patrick's	

### Boating

Class XI M. Bugg — Q. Rehmani M. Doloria — S.K. Joshi

### Badminton

	Singles	Doubles
Juniors	S. Lakhoria	—
Middle	J.S. Randhawa	J.S. Randhawa & C. Das
Senior	R. Gupta	J. Mann & N. Seth

### Table Tennis

	4	3	2	1
Singles :	R. Bhandari	V. Prakash	R. Rawat	K. Dubash
Doubles :	P.B. Shah	R. Rana	P.S. Jamwal	W. Wallace
	&	&	&	&
	W. Gonsalves	R. Bhattachar	R. Sinha	N. Rodricks

	Chess	Carrum	Draughts	Billiards
Juniors :	R. Marini	H.R. Kishore	R. Sahgal	L. Rai
Middle :	H.V. Chopra	S. Kant	J. Lin	V. Kapur
Seniors :	P.L. Sah	I. Ahmad	D. Das	R. Dubash

COCK HOUSE — ST. PAUL'S

## Old Boys Section - 1969

**Mehir N. Rana:** Who was at S. J. C. from 1941 to 1949 was married to Miss Rikdi Kumari Bis, daughter of late Mr. Hiranaya Bahadur Bis, also **Dhir Narsingha Rana** who was at S.J.C. from 1946 to 1957 was married to Miss Dailiya Karki, daughter of late Mr. Khudgi Bahadur Karki on the same day, December 1948. S.J.C. wish the newly weds all the very best of luck.

**Ronald Doutre:** writes from Australia that he has settled down there. He works in a Savings Bank by day and goes to night classes for further studies.

**David Menzies:** who is also in Australia is attending a Technical School and finds the course of studies interesting.

**Vinod Tuli & Bharat Kaku:** are studying at M.A.C.T., Bhopal. Vinod has only another year to finish while Bharat has about three years left.

**Manoj Mutru:** who is at present in the N.D.A. since July 1963 has only four terms left to join the

Air Force Flying College at Jodhpur. He hopes to be commissioned in 1972.

**Jitendra Singh:** was in S.J.C. from 1955 to 1963 when he did his Intermediate Science. During his time here he was a member of the Senior Hockey, Cricket and Football first eleven. He was the School Tennis Champion. He has completed his I.I.T at Kharagpur. He writes that K. S. Rana and Arun Sahay are with him there. Zahoor Shah passed out in 1968 and Sanjoy Bhattacharya in 1967. Rajan Roy did his B.Sc from there and then moved on to Kanpur for his M.Sc.

Some of our old boys will remember **David** and **Bill Hannah** who were in S.J.C. during 1956 & 1957 while their father was planning the present University at Phoolbagh. Their father writes: "Bill really loved St. Joseph's and I remember with warmth and pleasure his two years there. After working most of the summer at a camp in New York state, Bill was killed on his way home when his car left the road and crashed into a tree near Manchester, New York. He was in his twentieth year, a

delightful kid who was really working at developing a philosophy about living-but who was not bitter or frustrated. May his dear soul rest in peace. **David** is working at Rexburg, Idaho. He has joined the Rexburg police force but doesn't think he will make a career of it. The objective is improvement of the financial situation so he can finish two more years of College.

The following account appeared in the Calcutta Herald- Feb. 28th 1959. J.P. in the U.K.

**Donald Albert Charles :** an Anglo-Indian Catholic born in Delhi, 41, has been appointed a Justice of Peace for the Bexley Magistrates Court in U.K.

Educated at St. Joseph's College, Naini Tal, Mr. Charles passed the Senior Cambridge in 1944, and the Intermediate in Science in 1946. He continued for the B.Sc. in Chemistry, Botany and Zoology from Agta in 1948. For the next ten years he was employed at Kanpur and Nagpur as a Chemist. While in India Mr. Charles was Secretary of the Catholic Club of Kanpur, and of the Kanpur Branch of the Catholic Association of India. Since coming to the U.K. in 1958 he has continued to be employed as

Chemist and is at present with the South Eastern Gas Board. He lives at Welling, Kent with his wife Dorothy (nee Monk of Kanpur) a dental clerk and their five children aged 3 to 16. He is associated with a number of Church & Social Service Organisations and is presently on the Board of Governors of St. Stephen's Catholic School, and Chairman of the London borough of Bexley Community Relations Council. He enjoys the distinction of being the first coloured J.P. for the Bexley Magistrates Court and is perhaps the first Indian Christian to be appointed as J.P. in the U.K. When interviewed by the "Evening Standard", he said, "I am overwhelmed at the honour and responsibility of the position. I hope people will not look on me just as a Magistrate for immigrants" - C.W. Mascarenhas.

**S. Kurdu :** is in his final year M.B., B.S. at Mathura Azad Medical College, New-Delhi. He passed out in Dec. '69. He has taken up Tennis and is No. 1 in his College. He is also in the Cricket, Hockey and Football. He misses life in S.J.C. and wishes to be a life member of the College Review to keep in touch with his Old school. He writes that he corresponds with **Sudhir Kohli** who has joined a tea plantation in Hatisgarh, Assam.

**Arun Chinnikrishnan:** is in his 4th year M.B.B.S. at A.P.M.C., Poona.

**Vikram Mehta :** (S.C. '64) writes from Chandigarh, where he is studying for his Master of Business Administration. This course is of two years duration. On completion of the course, he hopes to go abroad for further studies. His brother, **Navin** has also joined the same course, though he will have to complete his 1st year in Govt. College, Chandigarh. He meets **Vivek Nijhowne** (S.C. '64) frequently. He is doing Economics Honours at the same University as Vikram.

**Rex D'Souza :** is at present studying in St. Edmund's College, Shillong. His brother, **Joe** has joined the Army.

**Ajit Thakur :** S.C. '62, who is in the 4th year Technical course at Kanpur and majoring in Chemical Engineering, gave the following information. **Ajit S. Gill** has done his graduation in Electrical Engineering from I.I.T. Kanpur in '69. He has a job waiting for him in Canada. Others in the I.I.T. Kanpur are **Rajiv Sahay** and **Anwar Ali** both in their fifth year in Mechanical and Metallurgy respectively. **Rajiv Kumar** and **G.S. Bhandra** are in their 4th year in Mechanical and Chemical respectively, while **R. Laroia** and

**M.K. Joshi** are in their third year and **Riprayan Singh** is in second year.

**Dicky Rose Meyer :** wrote early in '69 that he was contemplating leaving for Australia, although he was doing very well in Gonvaters, Calcutta, but in the interest of his family he decided to emigrate. **Donald, Peter** and **Maurice** are in Melbourne. **Hob** is in Perth.

**Barold Pires :** S.C. '69 was married on the 26th April '69. He visited St. Joseph's at the end of June.

**B. Netarwala :** S.C. '67 is studying at St. Xavier's, Bombay. **F. Dubash** is doing his B.Sc. also there. **H. Lamoury, D. Soares, F. D'Sa** and **S. Gutt** are also studying in the same College. **D. Ezekiel** is studying at Bandra, while **G. Figueiredo** is in St. Xavier's Technical College at Mahim.

**Lt. Cdr. H.B. Azevedo, I.N.** at present in Calaba finished with distinction in Intermediate Science in Feb. '47. Rev. Br. T.A. Murphy was his teacher during those years. He hopes to visit Naini Tal some time.

**Suhir Sah :** Writes that after he was commissioned from I.M.A., he was posted to Deolali on a Young Officers' Course. He expects to go either to Mountain or Field Artillery. He is prepared for either.

**Michael Perry :** Writes frequently from Australia. He is working during the day but attends classes in the evenings. He has met a good number of S.J.C. past pupils.

**Mgr. Ivan Estross :** Who did his Intermediate Science from St. Joseph's in 1928 has been appointed Vicar General of Allahabad Diocese in August this year.

**Vijay Kapoor :** S. C. '62. Writes from Delhi that he is now a B.Com. graduate and proceeding to the States for higher studies.

**Mr. O. J. Miller :** S. J. C. 1922-1930. Writes from Lucknow that after thirty-six years serving on the Northern Railway he is about to retire. He still remembers many of the Brothers who taught him or whom he came into contact during his years at Sem, notably Bro. Connolly, Callane, Paul, Peter, Collins and Martin Wells. He hopes to visit Sem some day.

**Rakesh Khanna :** S. C. '67. is doing his B.Com. in Delhi and also in his spare time he had an exhibition in hand painted fabrics. His nephew is now in St. Joseph's.

**Dr. J. N. Jaswal :** from Gorakhpur, in seeking admission for his Grandson, very kindly gave the

following account. "My eldest son, **Vinod Kumar**, did his Senior Cambridge from your College and then after his M.Sc. in Physical Chemistry, is employed by Messrs. Karam Chond Thaper's Group of Concern and is now posted as Assistant General Manager of Sugar Factory, Pott Bawalpur, Distt. Deoria. My second son **Shiv Jaswal** whose entire education has been at your College is a Commissioned Officer in the Army in the Bombay Engineers. Lately he completed his parachute jump course and at the time of writing is on a three year's Engineering Course at the Armed Forces Engineering College at Poona. **Ashish Jaswal** who was also a student of your College has been selected to join the Medical College at Poona. My nephew, **Ajit Thakur**, who after passing also through your College, is now doing very well at the I.I.T., Kanpur. Finally there is another nephew, **Lalit Rai**, currently studying at your College. Now you can understand my desire that all my grand children should join your College and hence I beg you to keep your eyes for them.

**H. Saleem, Tej. Singh, Ratan Mall, Pushkar Bisht :** are doing B. Com. in St. Stephen's. **Khern** is in Hindu College; **Ashok**

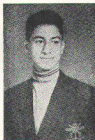


Bisht is also in St. Stephen's. Deepak Mehta is in Hare Raj College.

Marghoob Rehmani : S. C. '62 has until summer 1970 to become an M.E. in Electrical Engineering in Aligarh. Masood S. C. '64 has reached about half way towards his M.E., B.S. in Lucknow, while Qamar S. C. '69 says that he will try for engineering next year. Milan Joshi S. C. '66 who got his results at the time of writing this, secured distinctions in three out of four subjects in his Intermediate Examination with an aggregate of 80% marks. He got a position in the U.P. Board.

Shankar Ghosh writes from the N.D.A., Roorkee, "I have already spent two years in this Academy and though I'm very much a part of flesh and bone of this institution, I greatly miss those ten memorable years I spent at my Alma mater. My final year in 1966 when I was in the I.S.C. with Rev. Br. Foley as the Principal, holds an extra special place in my heart. I think that one of the most difficult things for me to do is to explain to some one how much I miss my years in Sem. What Sem has done for me cannot be paid back as easily as one pays back other debts. There are not many Cadets from Sem

here at the moment. The Senior Cadets include Lalit Pande S. C. '63; H.S. Sandhu S.C. '66; L.M. Mehra and M. Mutia both S. C. '67 and myself. Among the new comers are Mukesh Joshi N. Jain and Vicky Mehta all S. C. '68. All three have settled down to their new life and are doing very well. In addition to these there are many others who left Sem before doing their Senior Cambridge and we form



a very happy reunion. I do wish that Sem would encourage more boys to try for the N.D.A. I think that they have an extremely bright future in our Armed Forces and I am sure that the Sem Lads will do very well.

## AUGUST

1st. The Superior General, the Provincial and Brother Foley left for Delhi very early as the Superior General has a large itinerary but only a limited amount of time to do it.

7th. Rev. Dr. E.F. Clancy Former Superior General of the Christian

Brothers passed to his eternal reward in Rome today. He had a plan to visit all the Schools in India later in the year.



15th. Independence Day. After Mass and Special Prayers the National Flag was hoisted to the strains of the National Anthem, after which three messages were read in Hindi. The usual celebrations were held in the Halls in the evening.

26th. Rev. Bro. A. Keane arrived today. He had some interesting talks with the boys.

## SEPTEMBER

8th. Teachers' Day. A full account of the day's programme is given elsewhere in the Review.

14th. The students from Panmagar played the First Eleven in football. The match ended in a draw 1 - 1.

20th. It started raining this evening.

21st. Still non-stop rain.

22nd. Raining again today. There are several landslides on both the Bhawal and the Naini Tal-Kathgodam Road.

23rd. A huge landslide took place along the road over to Degree College. A student from that College died as a result of the falling boulders.

30th. Senior School Excursion was held this evening.

**Patrick Cantwell:** was in St Joseph's from 1903 to 1911. He is now 77 years old and living at Shalleress, England. He writes "I left St. Joseph's after the cold weather holidays of 1910-11. I had to stay over the winter as there was some cramming which I had to do before I came to England to prepare for the Indian Police Examination which I passed 24th out of 80, I was then sent to Burma where I remained only two years as I was attacked by illness. I spent the rest of my time here in England. I am now the sole surviving member of a large family". "The reason I write this letter is to ask you if you think it would be any good if I were to come back to live in India somewhere up in the hills." He still remembers his old teachers - Drs. Holland, Lupton, Connolly and Columban - all of whom have long since passed to their eternal reward. "I enclose a photo of myself taken when I was working in the R.A.F. in Surrey in 1962. I would like to enquire about some of my School pals - perhaps some kind reader of the Review will know of their whereabouts - George Shailom, Eustace Carvey both from Calcutta, D.C.Green from Burma, Maurice Bickers, Dennis Niblett and his two brothers; the three Anderson brothers and George Camell - all



Photo taken of myself about September 1962, at Headley Court, M.R.U. (m) Epson, Surrey dated 29th December 1962.

came from Quetta; Bill Webster; Woolwing and the three Macdonalds from C. P. Arthur Scott and Fraser brothers Douglas and Cecil and Fred Delanagrade last of all Louis de Souza from Allahabad. If you can get any news about any of these, it would make me very happy. My very best wishes to all in St. Joseph's. May God bless your work.

### Reminiscences

It all started in 1927, when the Rev. Bro. Baptist Culhane visited Asansol, where I was studying at St. Patrick's. I was to have gone to St. Joseph's College (North Point), Darjeeling in 1928, but Bro Culhane thought otherwise. He persuaded my

father to send me to another St. Joseph's College in Naini Tal, instead, I liked this, as my friend Colin Coffin, who lived next door, also studied there. So it was that on a sunny March morning, I got my first view of the famous 'Seven Towers' from Rohilla Lodge, a boarding house, run by a Mrs. Knight, which was situated just below the Ramsay hospital. Later, when I was safely installed in one of these towers, (they were used as small dormitories in my time) I wondered, tucked away in bed, what the future held for me.

I was in Sem for two years only—unforeseen circumstances having prevented my continuing there any longer. But what a memorable two years it was. Being a new boy, I was very wary in all that I did and said. The man every new boy came to know immediately was burly Bro. Paul, (Pilla to us). Like a sentinal, he stood at the box-room door, his inimitable cap perched on top and chewing, rather than smoking his cigar. Invariably, he stopped you for some reason or the other, to admonish you for your tousled hair, scruffy neck, dirty shoes and what not. Never shall I forget the night we heard a raucous bellow (we had anticipated something of the sort!) from within his cubicle, and

he charged out in his night attire, cap on. The same morning he had given Tony Wakh(Wulla Wulla) a strapping and Tony had now retaliated with ample stinging nettles between Pilla's bedsheets. Ofcourse, as was the rule with boys of that time, no one dared sneak, so Pilla had the whole dormitory gated on Saturday evening.

Bennie (Rev. Bro. Bonaventure) was another lovable man. He was Principal for a time when Cobie (Rev. Bro. Connolly) was on leave, in Ireland. Bennie reigned supreme in his Science Laboratory, and was often seen to flourish his red-covered 'Heat, Light and Sound' at dull-headed scientists in his class. Rev. Bro. Leonard Murphy (Spud III) was our class master. I, for one, owe to him my three consecutive Elocution successes in another school, for all which he made me digest passages of 'Julius Caesar'. Yet again, none of us ever forget the 'Lady of Shalott', though it was not one of our prescribed books.

Spud revelled in its lines and it was nothing unusual to hear a sudden out-burst of, "The mirror crack'd from side to side" or "A bow shot from her bowyer eaves" in the midst of Virgil's Aeneid or that horrible man Williamson's History of the British Empire.

There were three other stalwarts of Sem—stubborn old John Gleason, his pal, Donald (Duck) Wainling and old man Ludwig. The first two were inseparables, whom the boys nicknamed 'Mr. Colagher and Mr. Shean' after the popular song of those days. Both were 'top', well above their ankles, and we often wondered what floods they were expecting in Naini! 'Ludl' was a musical gem and his loved renditions of 'In a Monastery Garden' and 'In a Persian Market' still ring melodiously, though nostalgically, in my mind.

And what of the boys themselves, the boys who won the Jackson hockey and football tournaments on the 'Flats', those who topped the three Cambridge examinations, getting honours and places in the U.P.; those who hailed on the College playground for possession of the Mount A junior and senior football cups—these were inter-class matches—and the great athletes of those days who won laurels for Sem. I hope some of them will read this article, may be 'Black' Farmer, a full back of repute; 'White' Farmer, who played alongside him; Wangleo (What a goalkeeper he was); all the Whitakers; Trevor Kemp; Roacher; Brian Allum (tall and respected who hailed from Amritsar); and those wonderful athletes, Bythes, Lundsen, Roscoe, Fred and

'Tama' Elroy. Does anyone of the late twenties remember them? I shall never forget them.

I had occasion to re-visit Sem this year. It was all there, just as it was in the time of 'Coke', 'Happy', 'Pilla', and Spuds I, II, and III. Back came visions of the past, as I wandered through the passages and corridors, saying 'hullo' to Newman Traynor (Hunter?), Claude Forrester (his father was Band Master of the Viceroy's band), Phil and Jimmy Dezan who hailed from Burma, Terry Walsh, Ise, the clever lad who had joined us from Milsington, Simla, Foxton from Bandikui, 'Congo' Crisford, Peter Ryan and a host of others. On the playground, we were all there, stringing our clubs to Ludl's music, in the main hall, the Miles, Mulane and Smith, perseveringly giving us piano lessons, and Judy Calvert, consoling and tending to us at Stone Cross.

This was the 'Sem' that I knew, the 'Sem' of yesterday, where I spent two happy years, never to be forgotten.

Gerald A. Borge,  
I.P.S., 1928-39  
Commandant,  
VHA Battalion P.A.C.,  
Sirapur

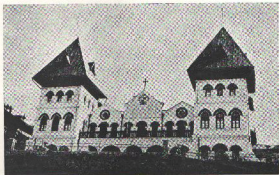
We have just received news about the wedding of Ashok Mehta and Subash Mehta. The wedding ceremony will be on 4th December, and on 5th December '69 respectively at Delhi. S. J. C. wish the newly weds all the very best of luck.

**Humayun Khan :** who was in S.J.C. from 1966-1968 when he had to leave on account of the death of his father writes "I topped the list of the successful candidates in Pre-University (Arts) in the year 1967-68 of the Aligarh Muslim University. Now I am in B. A. (Hon) IV Semester. I am also the Joint-Secretary of the A.M.U. (Indian) drama club. I take part in other literary activities of the University as well as. Sir, I attribute my success to the firm foundation that was laid at 'Sem'. I have demonstrated my



reverence to that 'August' institution many times and I shall continue doing it in future as well." Humayun very kindly presented a cup for the Table Tennis Tournament during his brief visit here this year.

## Towers of S. J. C.



## DISTINGUISHED VISITORS TO S. J. C. IN 1969



Miss M.L.M. Naidu, M.P., from Andhra Pradesh,  
and Miss A. Reddi with the Principal.



Miss M.L.M. Naidu, M.P., Andhra Pradesh and Miss A. Reddi  
with the Principal and the Sisters of St. Ann.



# *List of Donors 1969*

The Principal, and the Sports' Committee have much pleasure in recording their sincere thanks for the generous donations given by the following parents, and also to those who elected to remain anonymous :

- |                          |                            |
|--------------------------|----------------------------|
| 1. Mr. C.S. Mann         | 30. Wg. Cdr. A.A. D' Costa |
| 2. Mr. K.K. Agarwal      | 31. Dr. Khazan Chand       |
| 3. Dr. M. Sobri          | 32. Mr. M.R. Sherwani      |
| 4. Mr. J.S. Belaria      | 33. Col. P.C. Mehra        |
| 5. Mrs. D.R. Mehra       | 34. Mr. A.K. Tikka         |
| 6. Karamani Kashipur     | 35. Dr. S.K. Shalkar       |
| 7. Dr. J. V. Figueiredo  | 36. Mr. J.M. Rihani        |
| 8. Mr. G.C. Joshi        | 37. Mr. I.N. Tandon        |
| 9. Mr. P.N. Mehra        | 38. Mr. C.R. Wallace       |
| 10. Mr. B.L. Gulati      | 39. Mr. D.C. Bajaj         |
| 11. Mr. P.S. Gokuldas    | 40. Rani Saluba Askote     |
| 12. Mr. S. Dayal         | 41. Mr. C.L. Sasan         |
| 13. Mr. N. Roy Choudhury | 42. Major Samr Singh       |
| 14. Mr. J.S. Bhandary    | 43. Mr. M.A. Qureshi       |
| 15. Mr. J.M. Kapur       | 44. Mr. L.L. Sah           |
| 16. Dr. W. Harrajji      | 45. Mr. R.R. Bhandary      |
| 17. Mr. S. Jina          | 46. Mr. S.S. Engineer      |
| 18. Dr. I. Joshi         | 47. Mr. B.D. Sharma        |
| 19. Dr. K.R. Shah        | 48. Dr. BR. Thakral        |
| 20. Mr. M.Z. Rehmani     | 49. Mr. V.K. Agarwal       |
| 21. Mr. K.L. Dutt        | 50. Mr. Mohindra Nath      |
| 22. Mr. D.A. D'Crane     | 51. Mr. T.S. Ravecha       |
| 23. Mr. A.H. Jeddy       | 52. Mr. P.D. Maskara       |
| 24. Mr. M.R. Gokrajani   | 53. Mr. C.C. Gilbert       |
| 25. Mrs. D.R. Ghandhi    | 54. Lt. Col. K.C.L. Shah   |
| 26. Mr. A.J. Rodericks   | 55. Dr. L.N. Taneja        |
| 27. Mr. P.N. Rochiani    | 56. Mr. V.N. Behal         |
| 28. Mr. Shyam Singh      | 57. Mrs. I. Phillips       |
| 29. Mr. Harkishan Singh  | 58. Mr. J.T. Monteiro      |

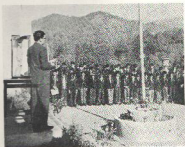
- 59. Dr. D.V. Chopra
- 60. Dr. G. Chatterji
- 61. Mr. C.S. Kanwal
- 62. Mr. Chaman Lal
- 63. Mr. P. D'Cunha
- 64. Capt. K.S. Grewal
- 65. Mrs. S. Smetacek
- 66. Mr. S.S. Chauhan
- 67. Mr. H.X.A. Mascarenhas
- 68. Mr. L.E. Pereira
- 69. Mr. M.N. Dubey
- 70. Mrs. K. Pant

- 71. Mrs. M. Dunne
- 72. Wg. Cdr. S.C. Virmani
- 73. Mr. K.K. Dar
- 74. Mr. Giriraj Singh
- 75. Mr. K.C. Sah
- 76. Mrs. T.D. Todd
- 77. Dr. J.D. Sharma
- 78. Brig. Haripal Singh
- 79. Mr. G.S.K. Sherwani
- 80. Brig. G.S. Rawat
- 81. Mr. H.C.S. Jagati
- 82. Mr. S.L. Sah



## OCTOBER

1st & 2nd. Were full holidays in honour of Mahatma Gandhi. A most interesting and varied programme of events was gone through during those days.



9th. The Annual Boat race. The race was started by Mr. B.K. Sarwal, Chairman of the Municipal Board.



10th. Semi-finals of the Inter College Table Tennis.

12th. The Biology boys in the I.S.C. Class went to Patwadanga. Final of the Table Tennis. S.J.C. won both shields.

14th. A Requiem Mass celebrated with three priests was offered today for the repose of Mrs. P. Gomes—Mr. Lefevre's aunt. This good old lady was 83 years old. R.I.P.

17th. Sherwood Sports.

19th. Some of our Gymnasts gave a rope-climbing display in the Flats this evening. This is a part of Naini Tal Autumn Festival week.

25th. Class photos taken today.

30th. The past pupils of All Saints' who are studying in St. Joseph's went to All Saints' for the Centenary Concert this evening.

31st. Christian Doctrine and Moral Examinations were held today. All Saints' had their Sports. The Senior boys and past pupils went to them.

## NOVEMBER

5th. Hindi Dictation for I.S.C. Class today.

12th. Practical Chemistry for the I.S.C. Examination today. We had our Prize distribution this evening.

13th. The home party of the Junior boys left today.

14th. The Junior boys for Bombay and beyond left this morning by bus for Delhi.

18th. Cambridge Examinations start.

22nd. Cambridge Examination in full swing.

24th. Christian Brothers' Inter-School Examinations begin.

## DECEMBER

3rd. All Examinations terminated at 3 p.m. Home Parties left.

4th. Bombay and Calcutta Parties left by bus upto Delhi.

# Our Photographs

## Child

*Try to find me in this picture dearest  
mother,*

*Your boy among a crowd of little friends,  
You will surely know your own from  
every other*

*Such help unto the eye, affection lends*

*I am gazing at you, Mother, do you see  
me ?*

*I thought of you and smiled as there  
I stood*

*Oh, how glad I am I look so bright and  
cherry,*

*You say "the truly happy are the good."*

# Our Photographs

## Mother

*In a brief and rapid glance, my child,  
I found you*

*Attracted by your merry, sunny face,*

*For in you, and in the pretty boys around  
you,*

*The smiling eyes reflected the pure soul's grace*

*It is that sweet grace fills mother's  
heart with pleasure,*

*For that the Lord loved little children  
too,*

*Oh, preserve untarnished such a  
priceless treasure*

*To God and Mother, ever, Child be true.*

# CLASSES



## I. S. C. Class

Seated: (L. to R.) Q. Rahmani; P. Rezaei; Rev. Fr. BURKE; S. Khamis; M.S. Dehnia.

1st Row: M. Behal; S. Singh; D. Rawan; S.R. Choudhary; K. Pandey; D. Tanaka; V.S. Das; P. Mahanta; M. Jha.

2nd Row: D. Rana; S. Abraham; H. Daryani; S. Ghosh; D. Khatun; A. Patel; S.M. Hossain; V. Das.

3rd Row: M. Khatun; S. Joshi; J. Khosro; D. Chatterji; S. Sen; V. Patel; D. Tanaka; M. Tanaka.

4th Row: S. Banerji; R. Figueiredo; M. Patel; J.M. Singh; S. Ghosh; M. Bagg.





## Class X and Winners of Senior Inter-Class Elocution

Seated : (L. to R.) S. Singh; B. Jambh T. Dahi. Row No. NIGRAH; B. Bish; A. Nayal; B. B. Bhow.

1st Row : J.S. Meena; I. Akash; G. Gupta; M. Pandey; J.P. Roderick; B. Tandon; S.P. Singh; D. Dey; A. Singh; S. Chandra.

2nd Row : R.B. Singh; R.K. Gupta; R. Chandra; S. Singh; V. Kaur; L. Pandey; A.K. Singh; K. Bhow.

3rd : M. Roshan; R. Singh; M.H. Singh; B.S. Bana; V.K. Sharma; C. Puri; S. Chandra; K. Dahi; A. Singh; H. Chandra.

4th Row : N.K. Nair; W. Williams; P. Gaudin; R. Sharma; A. Meena; A.K. Jain; A.K. Singh.



## Class IX

Seating (L. to R.): S. Shaha, A. Turgut, P. Nigam, Rav. Nr. DATTI, R. Pandey,  
P. Jais, J. Vaidya.

1st Row: P. Akash, P. Saha, P. S. Jais, S. Ghoshal, B. Rishi, H. Raymond,  
D. Setauraha, N. Karmali, V. Agarwal, R. Maheshwari, S. K. Jais, R. Bhat.

2nd Row: H. Singh, R. Chopra, G. Banerjee, M. Kishor, R. R. Rishi, A. Singh,  
A. Jais, N. Saha, S. S. Bhat.

3rd Row: N. S. Bhat, I. Bhattacharya, S. Senapati, P. D'Souza, R. Tandon, P. Singh,  
R. Sharma, G. Bhat, S. Bhattacharya.

4th Row: V. Saha, M. Mahapatra, R. Nigam, P. Jais, R. Singh, N. Shaha, S. Ghosh,  
R. Tandon, S. Gait.

## *Dedication*

*This edition of the Review is lovingly dedicated to  
Mahatma Gandhi—the father of the Nation.*



## Class VIII and Winners of Middle School Elocution

1st Row: (L. to R.) C.K. Joshi; V.V. Pandey; S.R. Pandey; R. Khari; T. D'Souza;  
S. Kaur; S.K. Garg; B. Ravari; J. Gaudhar; R. Kochak; D. Parolia;  
V. Pothach.

2nd Row: Rev. Bro. McARTHY; R. Ankar; H.V. Chavara; G. Gonsalves;  
I. Bati; G.K. Sharma; A.S. D'Souza; A. Mahua; A. Gonsalves; R. Bhaurai;  
P. Kaural; N. Rajendra.

3rd Row: R.K. Joshi; P.S. Jeyarajulu; B. Sath; T. Menier; J.S. Gaudhar;  
W. Anandak; D.P. Singh; M. Todd; S.K. Hartman; S. Sath.

4th Row: A. Vaidh; Y.S. Nair; B.S. Bhat; M. Joshi; J.S. Raddhwa; R. Gali;  
P.S. Dama; R. Kapoor; V. Chinnay; P. Sharma.



## Class VII A

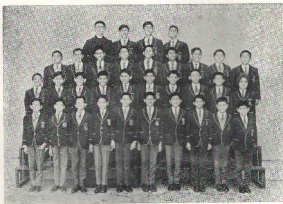
**Front Row:** (L. to R.) R. Gajjar, P. S. Shah, P. Sanyal, R. Revelliot, M.P. Bawaria,  
V. Kachar, S. Prasad, B. Bhat, C. Kachar, C. Jacobs.

**2nd Row:** A. Choudhary, H. Bhandari, D. Saldanha, L. Collins, M. King,  
J. Lee, G. Patel, S. Rodgers, E. Sharma.

**3rd Row:** M. Varmora, P. Patel, R.R. Singh, S. Misra, N. Hapley, D.M. Singh,  
V. Mousambhai, S. Rana.

**4th Row:** V. Roy, S. Shastri, R. Nanda, S. Hartwell (Not in Group—A. Tunking,  
P. Dast, A. Singh.)

(Class Teachers: Rev. Bro. T.A. COOPER)



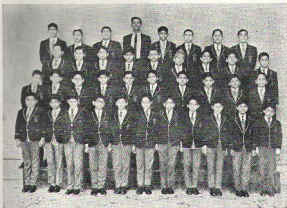
## Class VII B

1st Row: (L. to R.) K. Jais, M. Mukherjee, A. Mukherjee, K. Mahapatra, A. Bhowik,  
S. Khatun, M. Saha, R. Saha, P. Saha, R. Saha.

2nd Row: N. Jais, S. Saha, V. Hingorani, A. Taylor, A. Khanna, K. Dhanu,  
R. Bhattacharya, A. Saha, J. S. Banerjee, A. S. Datta.

3rd Row: R. Saha, V. Park, A. Saha, R. Ahuja, A. Gupta, P. Saha, K. Saha,  
S. Saha, S. Saha.

4th Row: Roy, Dr. R. S. LUNGA, S. Mahapatra, S. Khatun, N. C. Tripathi.



## Class VI A

1st Row: (R. to L.) N. Senzaki, A. Bantaghi, A. Saha, S. Tishu, A. Gupta, S. Rami, W. Ganasheva, P. Singh, S. Tange, A. Vasi, S. Rikar.

2nd Row: A. Saha, L. D'Souza, B.R. Singh, A. Bhattacharya, S. Singh, A. Mukherjee, H.R. Kishore, R. Singh, A. Mathew, K. Tandon.

3rd Row: P. Ahmed, B. Lina, Leifan, M. Chandak, H. Singh, G. Elliott, A. Saha, V. Pignolinsky, K. King, P. Jangpanai.

4th Row: T. Singh, P. Saha, C. Gilbert, C. Day, M. G. KFELOB, D. Saha, J. Khazaj, B. Marini.



### Class VI B and Winners of Division II Inter Class Choral Elocution

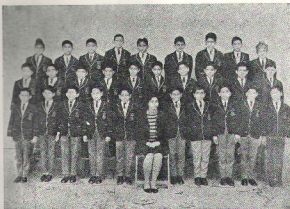
1st Row: (L. to R.) J.S. Nayal, A. Chaudhri, S. Joshi, A. Khich, N. Ghoshal,  
V. Singh, A. Bala, L.L. Sax, V. Patil

2nd Row: R.L. Saha, N.C. Khary, B.M. Thakur, S. Alam, P.S. Gai, P.R. Kothli,  
V. Subramanyam, G. Tewari, V. Kanchal

3rd Row: B. Kumar, A. Tewari, S. Jais, S. Pandey, V. Sharma, T. Bhatia,  
G. Sarmah, A. Mehta

4th Row: S. Chandra, R.C. Sahgal, A. Kumar, Mr. J. LEBEVRE, A.K. Sah,  
P.K. Singh, P. Gosh





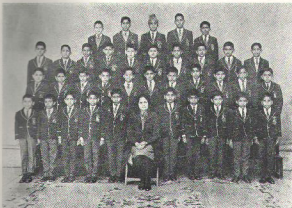
## Class V A

1st Row: (L. to R.) M. Bhadury, S. Arora, P. Bhatia, P. Kishorella,  
J. Puriya; Min. T. D'NAZARETH; L. Lina Lohani V. Chahal; N. Kapadia  
A. Rani; P. Jindal.

2nd Row: R.K. Gupta; Y. Singh; R. Thakral; G. D'Costa; Z. Merchant; S. Mehra;  
L. Mavara Chah; A. Sahai; K. Chopra; R. Jaggi.

3rd Row: G. Singh; S. Merchant; D. Bhattacharya; D. Gaudin; G. Sondhat;  
M. D'Costa; A. Guljani; H. Chandra; G. Kalia.





### Class IV A

1st Row: (L. to R.) A. Mohnotra; A. Sengupta; A. Gupta; V. Mahan; R. Kumar;  
Mrs. J. LEFEVRE; S. Agarwal; S. Kumar; S. Singh; S. Kumar; R. Sub.

2nd Row: A. Gidari; V. Varma; S. Prakash; A. Joddy; J. Roderick; R. Narain;  
R.S. Shah; S. Mongia; G. Jaisankar; N. Figueiredo; S. Meheroni.

3rd Row: D. Ginnalder; S. Palow; D. D'Souza; V. Philip; L. Patterson;  
M. Kumar; D. Corquardt; A. Sharma; K. Lal; E. Nalla.

4th Row: G. Patterson; K.M. Nishore; S. Singh; A. Kodikari; A. Rami.



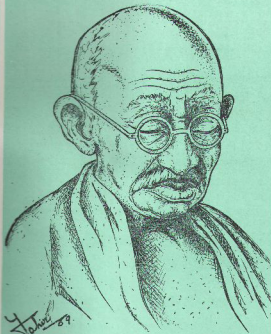
### Class IV B

1<sup>st</sup> Row: G. Anil, V. Pandey, S. Raj, K. Pandey, T. Nayak, H. Singh, Miss S. Mishra,  
M. Joshi, A. Sati, J.L. Sati, M. Agarwal, J. Mathan.

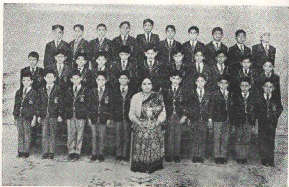
2<sup>nd</sup> Row: B. Gupta, V. Upadhyay, A. Qureshi, S. Agarwal, M. Joshi, A. Chandra,  
S. Upadhyay, A. Sharma, D. Mishra, L. Anil, C. Sati, D. Mishra.

3<sup>rd</sup> Row: M. Mishra, D. Bhowmik, S. Sati, P. Joshi, C. Pandey, K. Sharma, S. Chandra,  
M. Joshi, M. Singh, S. Chandra, V. Singh.





(1869—1969)



### **Class III B and Winners of Division I Elocution**

1st Row: H. G. R. B. K. Pandey P. Chatterjee M. E. Saha S. Ghosh P. Lohani  
 Mrs. I. BHATT; L.K. Das; A. Mishra; A.S. Sarkar; B. Saha A. Kumar.

2nd Row: S. Singh V.S. Taneja; S. Pandey; A. Ghosh; Anil Bhatt; S. Ghosh  
 A. Pandey R. Nanda; K.S. Ghosh; S. Saha A. Joshi.

3rd Row: P. Sachdev; R. Singh; R.L. Saha; A. Singh; Z. Wahiduddin; M. Arora  
 K. Chandra D. Das; N. Mahanta; A. Singh.



## Class II

1st Row: C. to R. J. A. Upadhyay, A. Jindal, J. S. Jaiswal, R. Bhatnagar, M. Kumar,  
 Mrs. A. BHARGAVA, S. Hingorani, S. Hingorani, R. S. Tandon, R. S. Singh, A. Singh,  
 R. S. Singh.

2nd Row: R. Pandey, N. K. Jain, R. K. Parikh, P. Pandey, R. S. Kishor, J. Grew,  
 A. S. Shrivastava, S. Grew, S. Singh, R. Chandra.

3rd Row: V. Pandey, A. Lall, V. Grew, V. K. Mehra, M. Kapoor, V. Singh,  
 S. Chandra, S. Pandey, P. Nalappan.





# *Dr. Zakir Husain*

Dr. Zakir Husain epitomised in himself the noblest values dear to the country—secularism and democracy.

There was little in the early life and family background of Zakir Husain. He was born of a family of Afghans who had settled at Quinganj, a small town in the Farrakhabad district in the U.P., early in the 18th Century. Although his immediate ancestors had taken to the profession of artist, his father studied law and became a successful lawyer in Hyderabad.

His father died when Zakir was barely nine years old. Zakir and three of his brothers were sent to their ancestral home at Firawah in the U.P. He had his primary Education at Idania High School.

Later he joined the M.A.O. College where his record was brilliant in studies as well as in debates and other extra-curricular activities. He married at the age of eighteen.

On his election as President of the Republic of India in May 1967, Zakir Husain's memory travelled back to the fateful October in 1920, when himself and some others had responded to Gandhi's call to the non-co-operation movement against the British rulers. Zakir and his companions had left their College campus in Aligarh and had formed a rival institution—the Jamia Millia Islamia. He said that he was a follower of Gandhiji and would do his utmost to take the people towards what Gandhiji strove relentlessly to achieve : a pure life, an active and sustained sympathy for the weak and down-trodden and a fervent desire to forge unity among the diverse sections of the people.

After teaching in the Jamia Millia for two years, Zakir left India with a passport which was valid for England only, but finally reached Germany, where, in the University of Berlin, he secured a Ph.D. in Economics. He also cultivated an understanding of painting, music and poetry especially Ghalib's poems.

On his return to India, at the age of twenty-nine, he was made Vice-Chancellor of the Jamia Millia—a great honour. He liked teaching primary and secondary classes. He could not endure untidiness or dirt but inculcated cleanliness through example rather than by harshness and severity. After partition he was appointed Vice-Chancellor of Aligarh University.

He was drafted into political life in 1932 when he was nominated a member of Rajya Sabha. Until 1956 he was both a member of Rajya Sabha and Vice-Chancellor of Aligarh University. In 1961 he was elected Vice-President and in the Presidential election in May 1967 he was elected President of India. He served as President until the 31st of May 1969 when, following a heart attack, he passed away leaving a grief-stricken country to mourn his loss.

In his short period his self-effacing dedication to duty and his concern for the interests of all, created a popular image of singular grace and urbanity.

Before his body was laid to rest near the building of Jamia Millia Islamia, it lay in state in the Durbar Hall of Rashtrapati Bhawan. As a lone large chandelier cast its subdued light on the catafalque, barefooted people and the rich, and all ranks of society came to cast a mournful glance at the body of one whom all revered during his lifetime.

S. M. Hadratji, I.S.C.

## *Rev. Brother E. Ferdinand Clancy*

Born in 1888, (the same year as the Brothers took charge of St. Joseph's College) in a little Irish town called Clonmel in the Co. Tipperary, Br. Clancy began his eventful career as a Christian Brother with his appointment to the Varicose Office of Maestro di Camera in 1923. Always with a charming manner about him, an exuberant personality and great piety, he had an intense loyalty to the Church of Christ and his Vicar-the Pope.

In 1928 he obediently became the Principal at Instituto Marcantonio Colonna in Rome. In 1934 he became an ordinary staff member but in 1940 he was once again made Principal of the same College. For the next six years he remained there except when he was called time and again by his intimate friend, Pope Pius XII to go on several diplomatic missions during World War II, his services, no doubt, being enhanced by his fluency in several European Languages.

In 1947 he became the Brothers' representative in Rome and in 1950, he reached the peak of his profession as Superior General of the Christian Brothers. With great prudence and dedication, he guided his Congregation through the turbulent, restless postwar years. During his term as Superior General, Bro. Clancy had Schools opened in Uruguay, New Guinea, the West Indies, Zambia and other Countries which previously had not been considered. Membership in the Congregation increased by fifty per cent and over ninety-one new Schools sprang up all over the World.

A big man with a big heart, his intense devotion to duty caused him to visit all the Communities in the entire Congregation. In May 1951 he visited our College, St. Joseph's. His charming manners and personality made his visits memorable everywhere.

In 1966 he handed on the torch to Rev. Bro. Lodius, the first American Brother to take over the high office of Superior General. The



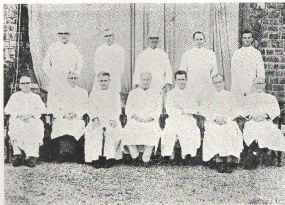
Rev. Dr. J.F. CLANCY TALKING WITH POPE PIUS XII.

next year found Bro. Clancy occupying the post of Consul to the Sacred Congregation of Religions, the only non-priest ever to do so.

Bro. Clancy had great plans to visit the Brothers' Schools in India on his way to Melbourne in December 1968, but God had ordained otherwise. A slight heart attack caused him to postpone his plans, but after a few days in bed, during which time thousands stooped heaven for his recovery, Rev. Bro. Edward F. Clancy passed to his eternal reward on August 3rd 1969. His last words before he died were "Now is the time to pray." May his dear soul rest in peace.

R. Figueiredo, I.S.C.

Photo taken when Rev. Bro. A. A. Loftus,  
Superior General of the Christian Brothers  
visited St. Joseph's on 31-7-'69.



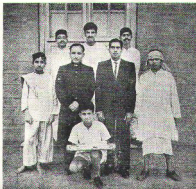
*Sitting: (L. to R.) Rev. Bros. Pulecham, Borkin, General (Provincial of Christian Brothers in India), Loftus (Superior General of the Christian Brothers), Hargben, Foley, Duff.*

*Standing: Rev. Bros. Gannon, McGrath, Egan, Walsh, McCarthy.*

# *Gandhi Centenary Entertainment*

## *The Annual Concert*

On June 12th 1969 the students of St. Joseph's College staged their Gandhi Centenary Concert. After the dedication, the programme befizixingly started with two of Mahatma Gandhi's favourite hymns - "Abide with me" and "Lead kindly light" - rendered extremely well by the School Choir under Brother McCarthy's guidance. "Will we have rice tomorrow" had a vigorous tune which contrasted effectively with the pathetic theme of hungry children asking their helpless parents for rice.





# Mahatma Gandhi

Mohan Das Karam Chand Gandhi was born without fanfare on 2nd October, 1869 in Porbandar, Gujrat. One of the greatest men of the age, his name is a household word every where. He was educated in Rajkot, Bhavnagar and finally was admitted to the Inner Temple, London. He became Bar-at-Law in 1891. His mother, a very religious woman, gave him lessons on religion and morals at home. These in his later life, became a firm guide for him.

After completing his studies in Law, he returned to India to start practice; first in Poowlay and then in Rajkot, but he was not crowned with success. He tried to get some job, but there too he failed. Failure after failure shattered his hopes, but fate had something else in store for him. At this stage when all the hopes seemed to be fading, he got a contract from one firm of Porbandar to serve as their Counsel in South Africa. In 1893 he left India for Durban. He had to go to Pretoria in connection with a legal suit. He took a train from Durban—travelling 1st class. On the way, a Britisher entered the compartment, and seeing a coloured man sitting in the compartment called two employees of the Railway. They asked Gandhi to leave the compartment, and travel in the 3rd class compartment, but he refused to bow to their wishes. On hearing the refusal, they called the police and Gandhi was forcefully dragged out of the compartment with bag and baggage.

He was shocked, pained and completely shaken by the cruel behaviour of the officials. Immediately, he called a meeting of the Indians. Indians in South Africa, were victims of many unwanted social and political evils in those days. They were maltreated and were deprived of justice. There were special laws to govern the Indians and they were forced to abide by these laws. Seeing the deplorable and oppressed condition of the Indians, Gandhi decided to organise the community and prepare them to wage a peaceful and non-violent struggle—Satyagrah (Passive resistance) for achieving their



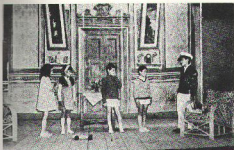
"Kare Chukana", a short play depicted an incident taken from Gandhi's adolescent life - wherein he found it easier to face his commitments rather than attempt suicide - was well performed.

"A Gandhi Fantasia" was also partly based on the incidents from the Mahatma's life. The tiny play "Malaria" shows a period of his life when he lay critically ill. It deals with a question asked by the young Gandhi's father of his distressed wife. "Will it matter to anyone but us if Mohan lives or dies"? One is left thinking about the Mahatma and how much it would have mattered, not only to India, but to all the World.

A difficult scene depicting Gandhi's death was adequately handled and this was followed in hushed silence by a ballad on Gandhi rendered beautifully

by Dr. B. McCarthy. The ballad, sung along the lines of a folk-song with the guitar for accompaniment was hauntingly captivating.

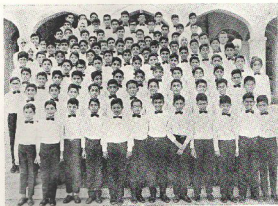
Interpersing these items were an Irish Dance, the well-known play by A.E. Prichard entitled "The Shark's Tooth" which was well staged and acted by the young children. The item "Pardoo and Mandoo" by Brian Jacobs had the audience in gales of laughter. Jacobs has the ability of making others laugh while he remains serious throughout.

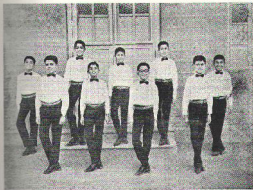


After the hilariously funny thematic "books" enacted by Brian Jacobs and his companion, the curtains lifted to the tragic scene of "The Valiant". A very well staged and acted play, which could easily have been ruined by over-acting, it moved one to tears. Every character was well-cast but the limelight was stolen by C. Figueroa as the condemned murderer and Samrat Prakash as Josephine Paris his sister. The deep understanding with which each character was handled by these boys, and the exquisite and sensitive portrayals, left one amazed. It was obvious that the director has worked with great insight and had the complete co-operation of the cast. All the subtlety and pathos was preserved and one found oneself blinking away the tears as the curtains closed.

"Adha Karyadar", a very light comedy, which followed, suffered by being misplaced in the programme. It ought to have preceded "The Valiant" and would have been thoroughly enjoyable. As it is, after the powerful play "The Valiant" it felt rather hollow and superficial. The boys, nevertheless, acted very creditably with great credit due to Mayank Pande as the Landlord.

The evening was enjoyable and one felt the stiff walk up had been well worth it. The boys and members of the staff need to be congratulated on doing so exceptionally well in such a very short time.





Dr. KANTA KUMARIN, President  
Sri V. V. GUHL, Vice-President  
Rev. INDERA GANDEIL, Chairman, Executive Committee  
Sri R. R. DIWAKAR, Hon. Secretary

**NATIONAL  
COMMITTEE  
FOR THE  
GANDHI  
CENTENARY**

राष्ट्रीय गांधी  
वर्ष समिती

K. K. SHAR  
Chairman

H. L. MASURKAR  
Executive Secretary

Sub-committee for Media of Mass Communication  
214, Ashwamedh Nagar, Parliament Street, New Delhi-1

Telephone : 28,300, 28301/202

P. C. Roy Chaudhury  
Head of the Gandhi Ref. Bureau

8/261 Greater Kailash, 1  
New Delhi-48.  
EN. S. 65.

Dear Brother Hughes,

Through my grandson Prabir Roy Chaudhury of Class III A we came to know of the very commendable Gandhi Centenary celebrations at your school. The Mass Media Sub Committee of the National Committee will be grateful to receive a brief but comprehensive report for recording. Could we have it?

I would like to publicize the celebrations there and seek permission to publish Brother McCarthy's teaching ballad in extenso in my coverage in National Solidarity an English weekly with which I am associated. Could we get one or two photos if any were taken for the occasion.

May I on behalf of the National Committee convey our happy feelings and convey our thanks to all who made the function a success. I wish the Delhi school's came up and follow St. Joseph's College.

With good wishes,

Yours sincerely  
(P. C. Roy Chaudhury)

Brother Hughes  
Principal St. Joseph's College,  
Hairi Tal.  
(U.P.)

# Teachers' Day in Sem

Amidst hushed silence, I entered the front of the stage through the parting in the huge curtain. The spotlight shone on me as I took a fleeting glance at the audience. I bowed low in School boy fashion and started "The year has come round once again to commemorate "Teachers' Day" - the birthday of one of the greatest Indian teachers- Dr. S. Radhakrishnan. On this auspicious day, we wish to impress on the Nation the importance of our teachers. Teachers shape the destiny of a Nation. Their life is one of service and devotion. It is in the finest of things that we observe "Teachers' Day", keeping in mind the tremendous influence that teachers have for good in moulding future citizens of the country. People, in the early days of education, considered teachers even more important than parents because the moulding of children was left to their care. Today, teachers have become people who in matters of principle, stand firmly and in matters of taste swim with the current.

Though not very lucrative, the teaching profession has its own compensations. It is probably the World's hardest, and at the same time, the World's most attractive profession because the teachers' workshop is a living laboratory in which he deals with human lives. For the teacher no two moments are the same.

We have teachers with us everyday of our lives. The lessons learnt may vary, but one thing all have in common is that they have been taught. There is no end to learning and teaching.



Let us then, today, thank the Almighty for our devoted band of teachers and today let the Nation show her love for her teachers. Let us pray for their well-being and loyalty to their divine calling. Let us try to go back to the days of old when "Gurus" were considered saints and were treated as such.

Come, O People and dedicate this day, the 5th of September for what it has been set aside" Jai Hind.

There were loud cheers from the hall as I folded my paper and once again went back through the opening in the curtain.

A few moments later the curtain opened once again and this time we saw our best group ready to entertain us. There was Michael Dugg with his guitar; Rev. Bro. McCarthy at the piano; Rai Figueiredo and V. Das at the mike while A. Patel was steady at the drums. When the musical entertainment was over, there was a thunderous ovation and loud "encore" appeals could be heard from the youthful audience.

During the interludes between the songs and music, speeches in Hindi from the Chief Minister of the U.P., the Education Minister of India and the Governor of the U.P. among many others, were read.

Shortly afterwards a short play was staged by the Junior Section of the School. Though it was short, the actors really amazed the audience and everyone felt that we should have more of it.

As outdoor activities were to fill in the remainder of the day, it was felt that the time had come to bring this function to a close. Hence once again I was on the stage - this time to thank the members of the staff for sacrificing their valuable time to grace the occasion and to congratulate the entertainers as well as to thank them for devoting all their spare time to make this entertainment on Teachers' Day a worthy tribute to those who give their lives in the service of the youth of the country.

The outdoor activities consisted of our Annual Aquatic Meet which took place in the afternoon and lasted until about 5 O'clock in the evening. Unfortunately it rained in the evening and so we were unable to have our distribution of prizes. A "free" evening brought Teachers' Day to an end at S.J.C. in 1969.

S.R. Choudhury, I.S.C.



# *The Dance Troupe of the International Centre for Kathakali*

Guru Madhava Panikar, the 70 year old Principal of New-Delhi's International Centre for Kathakali, appeared briefly as Lord Shiva in his divine form when the Centre's troupe performed *Kirattam* at St. Joseph's College on the 8th October. For the veteran dancer it was virtually a night off but he had vigorous roles in the troupe's other productions during their five-day stay in Naini Tal, notably as Hanuman and Duryodhana. Known affectionately as "Ashan", Mr. Paniker left his native Kerala to propagate his art in northern India when a group of Malayalee I.A.S. Officers in the Capital



Photo depicting Shiva-Parvati as Hunter and  
his wife in  
*KIRATTAM* in Kathakali Dance Drama

The hunter's dusky Parvati was danced by Padmanabhan with as feminine

formed the International Centre for Kathakali in December 1960. Others who came with him were the troupe's *madham* player M. Unnikrishnan and Nand Kumar, the dancer who took the part of Arjuna at St. Joseph's show, a proud Arjuna who is tackler and winner after his disastrous encounter with Shiva in the guise of a hunter. The latter was portrayed by Ramkrishnan whose clowning kept the interest of the audience when the severe demands of this great classical dance form would otherwise have had most people nodding.

touch as anyone could wish. Not a member of the troupe, Padmasubhan is often "borrowed" for the Centre's road trips, which have taken Kathakali to such unpromising territory as Karpur, Barcelona, Kota and Rajasthan.

A ten-minute Cadenza of the drums, a show-opener which seemed to go down well with the audience, saw Unikrishnan teamed with his namesake, V. Unikrishnan a recent acquisition of the Centre, whose brilliant work with those carved sticks on the chenda pointed up the delicate hand movements of the dancers.

This was the make-up man's day. Narayana Pillai, whose patient brushwork fashioned the fantastic black buffoon which is the Kathakali type for hunters and such forest-dwellers, put in a personal appearance as the hunter's gamekeeper and demonstrated that in a lifetime dedicated to this art he has picked up the dance side of it as well.

Someone came backstage after the show to thank the troupe and happened to ask Setu Madhavan, the singer, whether he were singing the same thing all the way through. Swallowing his surprise, Setu who had just sung hundreds of lines in Sanskrit and Malayalam in two dozen different ragas and seven different talas, enlightened him.

Valiant but almost ineffective attempts were made during the show to tell the audience what the Mudras were about.

Mr. Anthony of Sherwood, a Kathakali addict qua Malayalee, shouted over the mike what the dancers were imparting in their sign-language but the roar of the drums drowned his voice. St. Joseph's dance-lovers will be mollified to learn that similar efforts the next night at Sherwood using the lessons learnt here, proved equally fruitless. The producers sadly concluded that the subtle meanings in a Kathakali dialogue must remain opaque to the lay audience.

The producers are justified in feeling that this show at St. Joseph's proved that the great spectacle and high poetry which Kathakali is can get across even without a detailed understanding of the mudras and conventions. Like all great art, Kathakali makes big demands on the powers of understanding but repays our efforts with a deeper knowledge of life.

Donald Fickert

# Boy Scouts at S.J.C.

The 18th of June 1969 was an important day for the Scout Troop of St. Joseph's College, Naini Tal. The State Commissioner, Mr. Nawab Husain, presided at the Scout Rally.

The National Flag was hoisted by the Principal. The State Commissioner then invested the fourteen scouts who were proud to receive their badges; after this they gave a demonstration on the use of the various kind of knots and first aid. The Commissioner spoke with great enthusiasm of the good work that is being done by the Scouts all over the World. He was particularly impressed by the smart turn-out of the S.J.C. Scout troop. In conclusion he thanked the Principal and the Scout Master for their keen interest and help in the Scout movement.



Nawab Husain, State Commissioner of the State Boys' Scouts addresses the Scouts on June 18th 1969.

We observed one minute's silence in reverent homage to the late President, Dr. Zakir Husain, who was the Patron-in-Chief of the Scouts in India. The Scout Master then made a brief speech in which he thanked the Commissioner on behalf of the Scout Troop for his kindness in presiding and with this, the function was brought to a close.

G. Keelor.

rights. He was greatly influenced in this regard by Ruskin's thought provoking book, "Unto the Last", which he read during these years. From 1893 to 1914 he actively participated in all the Satyagrahs and other non-violent movements. His untiring efforts led the people to achieve what they never before even imagined.

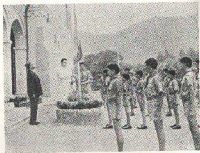
Rich with experiences, equipped with the potent weapon of Satyagrah, he returned to India at a crucial time when Indians were struggling impatiently for Independence, but had no fixed ideas, or strategy which could help to advance their cause and make their struggle a success. Gandhi accepted the challenge of time, and joined the struggle in 1915. He prepared the people for non-violent movements. He successfully launched Satyagrahs, peaceful non-co-operation and civil disobedience movements. He was imprisoned several times for organising such movements. Whenever he saw injustice and acts of violence he resorted to fasting. In 1947, Gandhi led the people to final victory of Independence.

Throughout his life, he explained to the people the virtue of Non-violence, truth and love, and the need for unity and universal brotherhood. He called people to fight actively against untouchability, hatred and injustice.

On 30th January, 1948, while going to attend the daily prayer meeting, he was assassinated. The light which was leading the people through darkness was extinguished not by a mad man, but by an ideology.

D. C. Shah

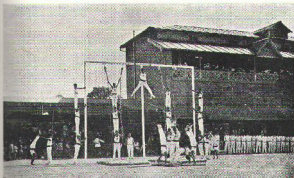
The hoisting of the  
National Flag on the  
occasion of the visit by  
Nawab Hussain— Chief  
Commissioner of State,



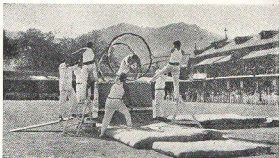
The Boy Scouts take the oath.

## *Annual Sports at St. Joseph's*

As the weather had not been very favourable during the first week of May for Sports' practice it was hard to say exactly when we would be able to start our Sports' Week. We, therefore, decided at the last moment to start the Week on the 14th of May. The snap decision led to another difficulty—who should we get to preside at the inauguration of the Meet. Here we wish to thank Lt. Col. D. Hyde who very kindly agreed to preside even though he got only four hour's notice.



ROPE WORK  
On Sports' Day '69.



### RINGS OF FIRE

On Sports' Day '89

Though the sky was overcast on the 23rd evening, the 24th was bright and clear and it was not long before groups of boys could be seen busily engaged in helping the Staff members in the various jobs that have to be done on Sports' Day. Promptly at 1.30 p.m. Sri. S.S. Ahmed, I.A.S., District Magistrate of Naini Tal arrived and took the salute of the March past.

Some events, especially those which take up a great deal of time, had been completed during the Sports' Week and hence only track events and team events were left for Sports' Day. Rev. Bro. McGrath with his years of experience in sports got things moving and the events were run off with clockwork precision. At 2.45 His Excellency Dr. B. Gopala Reddi, Governor of the U.P. and Shrimati Reddi arrived very quietly. They were the guest of honour at the Sports.

As each event was announced excitement ran high and the recorders were kept very busy. The Inter-House Relays proved the most exciting

events of the day. There was a brief interval at the end of the track events during which time the boys got ready for the Drills. Each year the drills have a fascination all their own and sports' day would be very hollow without a drill display. Great credit is due to the Games brothers for the excellent display of P.T. and Horse Work which they produced. The best man in

A Division was S. Kumar.

B Division was P. Sued

C Division was S. Singhal

D Division was S. Sah

E Division was C. D'Souza

F Division was A. Wilson

The winning House was St. Francis' with St. Peter's second.

The outstanding sportsman of the Meet was S. Kumar.



First Independence Day in Free India.



## GYMNASTS



*Seated:* M. Bogg; Q. Rahmani; Mr. F. Gomez (P.T.I.); R. Figueiredo;  
S. Kumar.

*1st Row:* A. Gonsalves; V. Puri; K. Sharma; J. Rawat; B. Jacobs;  
M. R. Dhandary.

*2nd Row:* P. Bhoora; J. P. Rudarick; G. Lunell; N. Hayder; G. K. Sharma.

*3rd Row:* P. V. Gandhi; W. Wallace; A. Patel; V. Chinnai; L. Pereira.

## WINNING HOUSE IN SPORTS



*Back Row :* K. Dubash; R. Elliott; R. Singh; S. Chawla; D. Tandon; M. Chaurasia; V. Kapoor; S. Singhal; P. Singh; A. Vazir; R. Banthia; S. Mehra; M. Varma

*2nd Last Row :* D. Das; D.P. Singh; N. Hayde; D. Singh; S. Senana; P. Muneri; M. Mascherebas; N. Radarad; S. Hartnett; P. Kanwal; K. Kang; R. Bhandari; L. Rao

*3rd Last Row :* P. B. Shah; R. Khark; H. Singh; G. Singh; G. Singh; K. Chopra; A. Sahai; R. Gupta; A. Gupta; Y. Singh; U. Singh; A. Sharma; V. Chait; K. K. Lal; D. Conquest; G. Pant

*4th Row :* D. Saldaña; S. Geel; S. Sank; S. Rogers; S. Kani; D. Pereira; M. Pinto; G. Elliott; H. Chahar; G. Sanchez; M.D. Cank; N. Lima Lertao; D. Bhattacharya; H. Kishore; A. Malhotra

*5th Row :* R. D. Singh; H. Qarashi; A. K. Singh; M. Dugg; G. Kaelor; B. Barker; P. Ralston; R. Somash; N. Nain; V. Daz; J. S. Bandhawa

*6th Row :* J. King; S. Mongia; P. Joshi; J. Singh; R. Mehra; S. Postup; S. Shervani; A. Bendi; S. Agarwal; A. Joshi; R. S. Shah; A. Wilson

*7th Row :* V. Mahat; V. Upreti; V. Shah; S. Kumar; S. Saigol; A. Rao; A. Gupta; J. Shah; P. G. Rautela



### Winners of the Medley Relay

A. Sah; P. R. de Souza; R. Figueiredo; J. P. Rodericks



*Best Swimmer :* M. Hugg

*Best Athlete :* S. Kumar

*Best Gymnast :* A. Patel

# Table Tennis in Sem

Interest in Table Tennis soared to great heights in 1968, and reached a climax this year, when more than a hundred and fifty boys (from Class VI to XI) joined the Table Tennis Club.

This year also, Mr. Balbir Singh, R.S.O. and a former Punjab State Champion who has played against such renowned players as Barna and Belak, came to coach our budding stars. Among these, the following deserve special mention— K. Dubash, B.H. Singh, W. Wallace, R.Tandon, R. Somaal, I. Rodericks and P. Sharma.



As it was not possible to have an Inter-School Meet this year the Principal deemed it fitting to have an Inter-House Tournament (the first we have had for more than a decade) to cultivate the new surge of interest and talent. An Organising Committee, comprising two members from each of the four Houses was soon elected. The Committee was as follows:

Rev. Bro. J. A. Hughes (Chairman), R. Somaal (Secretary) and K. Dubash (St. Francis') W. Wallace and B.H. Singh (St. Paul's) R.K. Gupta and I. Rodericks (St. Patrick's), J.P. Rodericks and N. Todd (St. Peter's)

A well organised Inter-House League was soon underway on each of the four tables. There were three Preliminary Rounds to decide the places for the "Knock Out".

On an interesting Final night scores of supporters of each House were present. On the second Table St. Paul's beat St. Francis'. On the third Table St. Patrick's beat St. Francis. The final positions were as follows :

	I	II	III	IV	TOTAL
St. Paul's	4	4	1	2	11
St. Francis'	3	1	3	3	10
St. Peter's	2	2	2	4	11
St. Patrick's	1	2	4	1	8

At the same time as the Inter-House Tournament was being played, another tournament was also being run. This was the league between all the boys on each table to obtain the seedings for the School Championships.



The Seedings having been completed, the First Table or School Championship and the other Table Championships, were started as soon as the Inter-House was over. The Final stage having been reached on each table, a date was fixed for the big event.

The Commissioner, Mr. A. K. Singh, kindly consented to be the Guest of Honour. Mr. Balbir Singh, B.S.O. was the Referee.



8.1.1 Table Tennis Championship Finalists.

The matches were played in an enclosure fit to hold any State or even National Championships, which had been set up in the Gymnasium. Most of the Staff Members and all the Boarders were present to enjoy the memorable evening.

The matches of the lower tables were played first. The standard of the game and the interest of the spectators increased with each successive match until the climax was reached when the two boys to contest the Senior Championship entered the enclosure. In a ding dong battle of skill and nerves, they provided us with spectacular Table Tennis. K. Dubash (Class X) beat R. Sornaul (also Class X) in three most exciting and very closely contested games.

A fitting faith to evening was brought about when the Guest of Honour was cheered by the whole school, as he posed with the winners for photographs.

### **The Results**

#### **First Table.**

Singles: K. Dubash beat R. Sornaul.

Doubles: W. Wallace and N. Rodericks beat R. Tandon and S. Chawla.

**STAFF 1969**

### Second Table

Singles : R. Kumar beat H. Bishr

Doubles : R. Sinha and P. Jauwal beat Y.S. Negi and P. Singh

### Third Table

Singles : V. Prakash beat J. Chandelhi

Doubles : B. Rana and R. Bharnagar beat L. Rai and R. Joshi

### Fourth Table.

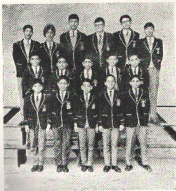
Singles : R. Bhundary beat A. Gonsalves

Doubles : P.B. Shah and W. Gonsalves beat C. Keelar and S. Kakar.

The interest in Table Tennis did not cease with the end of the School Championships. Our boys went on to achieve fame and success in the District Championships in which we won three out of four titles (not having participated in the fourth).

Also D.S.B. College and Shornood College teams came to play us in friendly matches. We hope to meet again and many others in 1972.

R. Sonail.



1969 Inter-House Championship Winners.

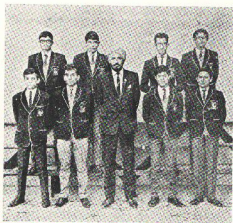


**S. J. C. Table Tennis Team  
in Naini Tal District Championships**



(L. to R.) R. Tandon, W. Wallace, K. Somai, Mr. Balbir Singh, S.J.C. (Coach)  
K. Dubash, B.H. Singh, Parth Sharma,

## S. J. C. Table Tennis Organising Committee



*Back Row : (L. to R.)* W. Wallace, R. Yamaa; (Secretary) K. Dubash,  
B.H. Singh,

*Front Row :* " N. Todd, R.K. Gupta, Mr. Balbir Singh, R.S.O. (Coach),  
J.P. Rodericks, I. Rodericks.

# *Autumn Table Tennis Tournament*

In the Autumn Table Tennis Tournaments we entered a team of six for the Inter-School while only four for the opens. Competing with us in the Inter-School were Sherwood and Sainik School.

We made our way to the top in the Inter-School Tournament. K. Dubash reached the final after beating Sherwood No. 1. He met with Sherwood No. 3 in the finals. After an exciting match K. Dubash beat his opponent.

In the doubles we were more successful for both the finalist teams were from Sena.

In the opens we were equally successful. K. Dubash on one side and R. Somaal on the other worked their way to the top, the former eliminating a previous year's finalist and B.V.M. No. 1.

In an exciting match of five games R. Somaal beat K. Dubash and thus earned the title of Naini Tal District Champion.

K. Dubash

## Summer Tournament

This year our team of ten entered for both the Senior and Junior Summer Table Tennis Championships held in Naini Tal — all ten were entered for the Junior's while a mere four for the Seniors. We were very successful in the Junior Table Tennis — eliminating all opposition as we went along. To our satisfaction both finalists turned out to be boys from our School — K. Dubash and B. H. Singh. In an exciting final held on the 31st June, K. Dubash triumphed, beating B. H. Singh at Freemason's Hall.

We were less successful in the Senior Tournament, most of our representatives being eliminated before the semi-final. Although competition was severe one reached the final meeting the former Aligarh University Champion. He was K. Dubash. The latter was unfortunately beaten. However, he was awarded a special trophy by a spectator (who happened to be an ex-student of Sen) for his brilliant show.



K. Dubash (X)

Editor's Note: The interested spectator and past pupil was Mr. Himayun K.H. Khan. On behalf of all concerned we offer him our sincerest gratitude for his continued interest in his Alma Mater.

## *Our Billiards*

Billiards has been played by us for a very long time. We have three tables two standard size and one small one for novices. Only boys from Classes VIII upwards are allowed to join the club and those who do, are put on respective tables according to their ability.

The Billiard room is opened on all holidays and half holidays. On a full holiday each boy gets an hour to play and on a half holiday half an hour, so that everyone gets a chance to play.

Every year, after the Dussehra holidays, the Annual tournaments begin. This year there was keen competition on each table and there were many close games.

The finalists on the 1st table were K. Dubash (Cl. X) and S. Chawla (Cl. X).

The finalists on the 2nd table were V. Kapur (Cl. X) and A. Vaish (Cl. VIII).

The finalists on the 3rd table were L. Rai (Cl. VIII) and R. Sinha (Cl. VIII).

K. Dubash & S. Chawla

# *The Elocution Contest - Senior Section*

The Annual Elocution contest at St. Joseph's was held on the 30th of September in the presence of a very appreciative audience, Mrs. A. March very kindly presided on both the Senior and Junior nights. The girls from both St. Mary's Convent and All Saints' School were present. Our judges on the first night were Miss R. Compton, Principal of All Saints'; Mr J.Gardner from Sherwood College and Mrs. F.Keeler from All Saints'.



C. Figueroa Winner of Gold Cross  
for Christian Doctrine, 1968.

The evening opened with Class VII B who recited Lindsay's "The Ghosts of the buffaloes" followed by Class VII A's version of Newbolt's "He fell among thieves". Both classes were good but were hardly a match for Class VIII who recited "The Congo" so well that they won the first prize for this section. The Inter-House Competition for classes VII A, VII B and VIII was most interesting and keenly contested. Sampat Prakash of Class VIIA emerged victorious from this group.

After an interval of a few minutes the inter-class competition for Division Four was begun. Class IX recited Mansfield's "The Rider at the Gate"; Class X did "The Highwayman" while Class XI did Southey's "the Cataract of Lodore". Here again the competition was very keen and while Class X were the winners, there was only half a point in each case between the classes. In the individual competition of Division Four the competition was stiff; the final tally, however, gave the following results:

Brian Jacobs Class X - 1st; R. Figueroa Class XI - 2nd and S. Banerji Class XI - 3rd. This ended the first evening of the Elocution at S.J.C.

The Junior Elocution Contest, which had to be postponed, was held eventually on the 7th of October. Classes III to VI inclusive took part in

this evening's contest. The points which the various houses had accumulated in the Senior Recitation were on the board and those young lads were determined to make sure that their house did not suffer on account of any fault on their part. Tension ran high as the three judges—Sister Josephine, Mrs. B. Duckett and Mrs. R. Gardner—took their places. Miss A. Murch who had presided at the Senior night very kindly agreed to preside at this night's performance also.

Punctually at 5 p.m. the Chorus for Division one started with Class III B reciting "The Sea". This was followed by Class IV A who recited "Death of the Cat". Class III A's clear delivery of "The Engine" earned for them a tie with Class IV A for second place. Class VI B gave "The Couch" very forcibly but they did not do as good as Class III B who came first. The Inter-House Recitation in this section suffered somewhat but it was a great credit to young lads to stand before a critical audience and say their passages without faltering.

After a brief interval the Inter-Class Chorals for Division II began. Here again as in the other section and as on the previous night each boy did his very best to get a few extra points for his house. In this Division "Tarentella" recited by Class VII B got the first place while "Lepanto" recited by Class VI A came second. When the whole programme for the evening was finished and the points for the houses totalled it was found that they stood in the following order :

St. Paul's - 17½ pts; St. Patrick's 17; St. Francis' 18 and St. Peter's with 10½.

Miss Murch then very kindly gave away the prizes and in a few well chosen words congratulated all—both the winners as well as the losers—for their excellent performance, and encouraged them to greater efforts. A special word of thanks is due to Mrs. H. Ludwig who had worked so hard with all the groups to make both the Senior and Junior Recitation a great success, and to all the boys who sacrificed their time for these nights' enjoyment.

D. Kapoor & S. Banerji

## Winners of the Elocution Contest

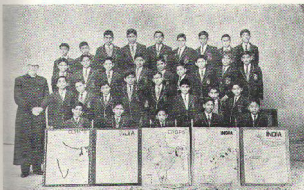


*Front Row :* A. Joshi; P. Joshi; P. Kirchelli; J. Nilayanna;  
G. Jaisinghani; D. Dua.

*2nd Row :* S. Prakash; S. Kaira; P. Jacob; A. Chandru; K. King.

*3rd Row :* N. Todd; R. Figueredo; S. Banerji; I. Rodericks.





Class VII A with a few of the Geography Projects which they did during the year to help towards the better understanding of what they learned from their Text about their Motherland. These Projects were done outside of class hours and the boys deserve great credit for the standard of work they produced and the free time they sacrificed doing it.



**Front Row** (L. to R.) Rev. Sa. Stefan; Mr. Kristian; Rev. Dr. Berke (Vice-Principal);  
 Rev. Dr. Hughes (Principal); Rev. Dr. Pakenham; Rev. Dr. Raul; Rev. St. Lyden.  
**2nd Row** Rev. Dr. Lyng; Mrs. A. La; Miss L. Dehn; Mrs. J. Mowda; Mrs. S. Hingorani;  
 Miss J. Johnson; Miss E. Bitt; Mrs. W. Gomez; Rev. Dr. Coombs.  
**3rd Row** Rev. Dr. Margaret; Mrs. Y. Taki; Mrs. P. Gomez; Mrs. M. Ludwig;  
 Miss T. O'Sullivan; Mrs. J. Leisner; Rev. Dr. Eugene; Mr. J. Leisner.  
**4th Row** Mr. J. L. Ross; Mr. B. Bag; Mr. P. Gomez; Mr. P. L. Sae; Mr. B. A. Freitag;  
 Mr. R. Casanova; Mr. G. Kerk; Mr. B. C. Ogata.  
**5th Row** Mr. B. C. Sae; Rev. Dr. McCarty; Mr. W. Gomez; Mr. D. C. Sae;  
 Rev. Dr. McGee; Mr. J. P. Sae.

# SWIMMING 1969

This year our annual aquatic sports were held on the 15th of September.

Mr. R.C. Jain, Additional District Magistrate, Naini Tal presided. Unfortunately he was unable to give away the prizes, due to a sudden downpour. As almost all the boys in the School are swimmers now, it took a great deal of elimination to pick the finalists for the meet. New records were established by, A. Gonalves, V. Kapur and S. Engineer. There had been several contenders for the best man trophy in each division.

The Obstacle race, Musical chairs and the Potato Spoon race proved very entertaining.

The Exhibition Waterpolo was interesting, as both teams fought a ding-dong battle. Diving performed by our young amateurs was good; this was climaxed by some superbly-executed figure diving by J. Khanna, P. Sheel, V. Chima and the swimming coach Mr. W. Gomes.

*Best Swimmer : M. Bagg*

*Best Swimmer "A" Division : M. Bagg*

*Best Swimmer "B" Division : P. Sheel*

*Best Swimmer "C" Division : A. Gonalves*

*Best Swimmer "D" Division : V. Prakash*

*Winning House : St. Paul's*

*New Records were established in the*

- (1) 25 metres back stroke "B" Division by V. Kapur
- (2) 25 metres breast stroke "C" Division by S. Engineer
- (3) 100 metres free style "C" Division by A. Gonalves

## SWIMMING — WINNING HOUSE — ST. PAUL'S



*1st Row :* Mr. J. Lefevre; J. Singh, S. Banerji; P. Gandhi; W. Wallace;  
S. Joshi; D. Kapoor; S.M. Hansotia; Q. Rehmani; Rev. Fr. McCarthy.

*2nd Row :* V. Agarwal; S. Bhatt; R. Nanda; C. Figueredo; K. Sahasr;  
R. Chandra; R. Singh; R. Tandon; S. Engineer; S. Kumar.

*3rd Row :* R. Marini; I. Ahmad; A.S. Dhillon; P. Jansal; A. Gonzalez;  
V. Paul; A. Taylor; R. Rawat; B. Jacobs.

## TENNIS (Juniors)



- 1st Row :* C. Jacob; S. Ravi; R.K. Gupta; S. Rana; S. Alam; P.B. Shah; A. Rastogi; N. Gandhi; A. Chandra.
- 2nd Row :* Divakar Singh; N.L. Leita; S. Singh; J. Gandhi; S. Kalia; Rev. Bro. E.B. Lyons; G. Keston; S. Prakash; B.R. Singh; R. Pandya; R. Kumar; S.S. Bhatt.
- 3rd Row :* A.S. Dhillon; S.K. Goel; G. Puri; A. Gonsalves; G. Gonsalves; S. Sen; S. Rodgers; A. Khanna; A. Taylor; C. D'Souza; K. King.
- 4th Row :* R. Sahgal; R. Bharti; L. Calcutt; D. Baklanov; V. Prakash; R. Suri; R. Sinha; V. Puri; B. Rana; H. Barnadart; G.K. Sharma.
- 5th Row :* P.B. Jangpanzhi; Shishu Rana; R. Seth; D.M.S. Grewal; J. Harcourt; P.K. Singh; G. Dias; R. King; A. Mehra; G. Gilbert.

## TENNIS CLUB (Seniors)



L. to R.

*1st Row :* R. Kuchak; S. Kant.

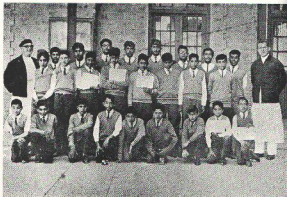
*2nd Row :* P.S. Jaiswal; S.K. Jain; L. Raj; N. Todd; R. Tandon; N. Rodericks;  
M. Moncarahan; H.V. Chappin; B. Jacobs.

*3rd Row :* P. D'Souza; S. Engineer; A. Vaisa; R. Chopra; Rev. Bro. Lyng; R. Marini;  
S. Gosh; N. Gosh; I. Rodericks; R.K. Singh.

*4th Row :* A.K. Singh; S.S. Bhatt; S.R. Choudhary; K. Sahdev; S. Chawla; V. Kapur;  
R.K. Gupta; M. Pande; J.S. Mann.

*5th Row :* R. Sarnal; H.M. Naraswala; B.H. Singh; W. Wallace; N. Sethi; V. Agarwal;  
R. Elliot; C. Figueiredo; J. Singh.

## TENNIS PRIZE WINNERS



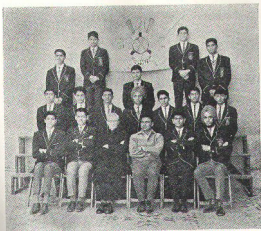
*1st Row : (L. to R.)* N. Ghoshal; C. D'Souza; A. Gonsalves; S. Kant; L. Rai; S. Sen; B. Jacobs; S. Singh; A. Chandra.

*2nd Row :* " A.S. Dhangra; R. King; N. Rodericks; R. Chopra; R. Sinha; G. Dias; M. Mascarenhas; N. Todd.

*3rd Row :* " Rev. Br. Long (Coach); R. Tandon; S.S. Bhat; B.H. Singh; R. Serrano; H. Netarwal; C. Figueiredo; S. Chandra; R.K. Gupta; Rev. Br. J. A. Hughes (Principal).

# Boating

Boating always has an attraction for all, but the fact that S.J.C. has its own racers and a practice boat makes this pastime doubly attractive. This year, however, we were not favoured with very suitable weather and hence many of those who joined the club were not able to put in the required practice to enable them to qualify for the Racers. However, the occasions in which we had the racers out were really enjoyable. We are most grateful to Rev. Br. Burke and Mr. Gomes for all they did and are still doing for boating in St. Joseph's.



## S. J. C. BOAT CLUB

*Scullers:* (L. to R.) Q. Reinman; M. Bagg; Br. Burke; Mr. F. Gomes; S. Joshi; M. Bolarra

*2nd Row:* ( " ) S. Chandel; P. Mathura; S.R. Choudhury; J.S. Mann; N. Behal; G. Bagaria; S. Engineer.

*3rd Row:* ( " ) S. Soni; R. Figueiredo; W. Wallace; V. Das; P. Rolston.



# OUR HOUSE



Q. Rehmani



S. Kumar



N. Kohli

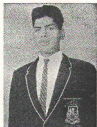


D. Rana

# CAPTAINS



R. Figueroa



P. Salazar



M. Barr



M. S. Bolivar

# FUTURE DOCTORS OF S. J. C.



*Front Row :* S. Soni; S.M. Hazratji; Mr. S.C. Sah (Biology Lecturer);  
Q. Rehmani; P. Kulston.

*2nd Row :* S. Abraham; M. Chaudhri; D. Rowat; D. Rama.

*Back Row :* S. Singh; V.S. Das; D. Tanuja; D. Chatterji.

## *Our Retreat—by Class XI*

A retreat is exactly what its name suggests, though at first glance it may not seem to be such. During a retreat one withdraws from the normal circle of life and tries to achieve a better understanding of God and self. It is only when one understands self that one can set about the task of self-improvement.

When we returned after the Sports' holidays, we were informed that we would have to spend the next three days on Retreat. This news was received with mixed reactions. Most boys, including myself, were glad to be able to get a few days of peace and quiet after the gay and lively life we had led during the holidays. Some chatterboxes, however, were worried at the prospect of silence.

After dinner on Sunday, we went to the class-room where we met the Retreat Master, Rev. Father Timoney. He explained the 'hows' and 'whys' of the retreat and gave us the retreat programme. We found that most of the time had been devoted to spiritual reading and lectures. One hour daily, however, was earmarked for "Visit to retreat master". While three quarters of an hour daily were set aside for "Question Box".

The Retreat days were all bright and clear. We read spiritual books, of which about a hundred had been provided. The lectures were expounded with great eloquence and enthusiasm, and they really penetrated straight to the depths of our hearts.

Several boys visited the retreat master and asked him about their personal problems. What passed between them is, of course, known only to the retreat master and the boys with the problems.

By far the most interesting part of the retreat was "Question Box". This was for boys with questions applicable to all, but who still wanted anonymity.

The three days of the retreat passed very quickly indeed. The last lecture was on Wednesday night, and on Thursday morning we now well prepared to face what remained of our High School career.

# *Day by Day at S. J. C. 1969*

During January the usual spring cleaning went on and the Teachers' residence in Dondabhad got a new frontage.

## **FEBRUARY**

**3rd.** Some of the boys who opted to come to S.J.C. for the I.S.C. Examinations in Chemistry and Maths II have arrived.

**10th.** Rev. Fr. Remaynus, O.F.M. Cap, our Chaplain left today for Italy.

## **MARCH**

**8th.** The first contingent of boys arrived by bus from Delhi. They had flown from Bombay.

**10th.** First day of Class. Rev. Mother Geraldine, I.B.M.V. was laid to rest today. R.I.P.

**19th.** Holiday for St. Joseph's Feast

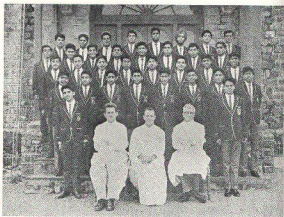
**24th.** New boys given their houses and colours.

## **APRIL**

**2nd.** Easter holidays begin at 3.00 p.m.



## RETREAT BY CLASS XI



*Seated:*     Br. Hughes; Rev. Fr. Timothy, C.S.S.R.; Br. Byrle.

*Front Row:* N. Bohal; & P. Mathura.

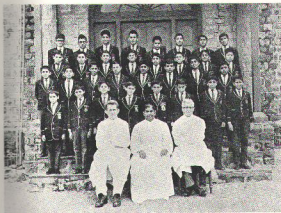
*2nd Row:* S. Singh; M. Ghaurasia; D. Tandon; D. Rawat; V.R. Dog; S.R. Choudhury;  
M. Pande; S. Abraham.

*3rd Row:* M. Taregi; D. Rana; D. Kapoor; S. Ghosh; S. Hazareji; H. Bismar;  
D. Tareji; D. Chawerji.

*4th Row:* A.S. Patel; N. Kohli; V. Daz; S. Joshi; V. Puri; M. Palla; J. Khanna; S. Soni

*Back Row:* A.K. Singh; S. Banerji; S. Kumar; Q. Rahmani; P. Rehman; M. Solanki;  
J.M. Singh; S. Gulati.

# Rev. Fr. LOBO WITH THE BOYS WHO MADE THE RETREAT



*Seated :* Fr. Hughes Rev. Fr. Lobo, C.S.B.R.; Fr. Burke.

*Front Row :* C. Jacobs; Carl Keeler; S. Prakash; B. Jacobs; C. D'Souza; R. Remedios;  
D. Pereira; M. Pinto.

*2nd Row :* V. Prakash; G. Gonsalves; M. Mascarenhas; R. King; N. Rodriques; N. Tydd;  
P.R. D'Souza; S. Rogers.

*3rd Row :* N. Hayde; I. Rodriques; G. Lunz; J.P. Rodriques; L. Gonsalves; D. Saldanha;  
L. Colson; J. Liu.

*Back Row :* W. Wallace; C. Figueiredo; R. Figueiredo; M. Bagg; M. Chimes; C. Elliott;  
G. Braganca; L. Pereira.

## Spiritual Milestones

June the 27th, the feast day of Our Lady of Perpetual Help was the long awaited day for Joseph Prem Nelappana, his brother George Pradip, Patrick Dunno, Michael Monteiro and Paul Akhilesh Kakra. It was their first Holy Communion Day.

It was indeed their day. All eyes were focused on them. Wearing their best suits, white rusettes in their button holes and holding candles in their hands they followed His Lordship Bishop Conrad de Vito up the aisle and took their places in the top pews of the beautifully decorated Chapel of St. Joseph's. Among the guests were Prem and Pradip's two uncles from Delhi and their aunt Reverend Sister Ursula from St. Mary's Convent,

### First Holy Communicants



M. Monteiro; P. Dunno; J. Nelappana; G. Nelappana;  
P.A. Kakra



Ramnet Park. Patrick's sister Michelle was there and so were Michael's two sisters Maryse and Margaret. Akkilesh was not alone—his teacher was beside him.

A consecrated Mass offered by His Lordship along with Reverend Fathers Fulgentius and Rago added to the solemnity of the occasion. Many of those present must have recalled happy memories of their own First Holy Communion Day.

The parents of the boys could not be present as some of them very far across the sea but surely they were all united with their dear sons on that special day, as they received the Holy Eucharist for the first time. It was a milestone in those young lives. Certainly, loving prayers must have been wafled to the Almighty to guide faltering steps along life's way.

The same boys were in the forefront a second time on July 13th—this time accompanied by three little girls in angelic white. It was their Confirmation Day at St. Mary's Chapel. How clearly and boldly they answered in unison the questions asked by His Lordship before administering the Sacrament of Confirmation. He then anointed these young soldiers of God. Another milestone was passed.

All present must have surely joined the absent parents of those children in their prayers to the Holy Spirit to direct and help those children to fight the good fight in life.

J. de Souza

# I. S. C. Results 1968.

	Eng. Lang.	Eng. Lit.	Geography	Math. B with Chem	Maths/ Addl. Maths	Mathematics	Physics	Chemistry	Biology	Art	Appreciation	Division
Prabhu Ram Bhandary	3	5	3	3/3	4		8	3			13	I
Anshok Singh Bhatt	4	6	9	6/3	3		8	6			20	II
Pushkar Singh Bhatt	5	3	3	3/5	6		8	6			28	I
Vijay Singh Bhatt	3	6	4	4/3	3		3	3			16	I
Arjit Bhusar	2	3	6	6/3	3		3	4			15	I
Gagan Brijwara	4	7	9	6/6	7		8	9				III
Shyam Sunder Bhatnagar	8	3	7	4/3	4		4	4			25	I
Manoj Kumar Chaurasia	4	5	3	3/3	5		4	5	5		13	I
Francis Paul D'Sa	3	3	3	3/6	3		6	6			18	I
Rex Thomas D'Souza	4	5	4	6/5	4		5	3			20	I
Sahil Gaur	1	5	3	6/6	3		4	3			14	I
Sarvesh William Jacobs	1	4	5	5/4	5		3	2			9	II
Arun Kumar Jain	3	3	3	3/4	3		3	3	6		14	I
Nirbhay Kumar Jain	4	3	5	3/4	4		4	4			15	I
Dinesh Chandra Joshi	2	6	5	A/B	3		3	9			18	I
Munesh Joshi	3	5	8	A/B <sub>2</sub>	1		3	5			13	I
Dharambhai Singh Khars	4	4	6	7/4	8		7	9			23	II
Vinay Kumar	3	5	6	5/4	3		3	3			17	I
Horace George Lamoury	3	5	6	7/6	3		6	7			23	II
Kartan Mall	2	6	4	6/4	4		6	6			23	II
Deepak Mehta	4	5	8	6/3	6		7	6			27	II
Navin Chand Mehta	3	6	7	6/3	4		6	4			23	II
Vivek Mehta	3	4	6	8/6	4		5	6			21	II
Sanjaya Anant Naravane	2	4	4	6/4	3		3	5			15	I
Purneshwar Rajani	2	3	4	5/4	1		1	2			9	I
Noor Rikram Rana	3	4	6	6/3	3		5	4			20	I
Nigel Bruce Reardon	3	4	7	6/5	3		7	3	6		20	I
Hanson Saleem	3	5	9	2/3	8		9	8			26	II
Ravinder Singh	3	4	8	4/5	5		8	4			26	II
Ranvir Singh	6	5	3	3/3	3		6	6	6		25	II
Tarinder Singh	3	5	7	5/5	3		5	6			24	II
Ajit Kumar Singh	4	5	8	5/5	5		5	6			22	II
Arun Kumar Shah	4	6	7	2/4	6		9	8				III
Derick Francis Soares	2	3	4	7/5	4		5	3			16	I
Jagdish Udaykant Thakursey	3	3	6	6/4	3		8	9			21	II

36 presented, 36 passed, 21 First, 13 Second, 2 Third

# *Footprints on The Moon - Apollo 11*

It has long been man's desire to walk on some heavenly body and now at last his dream was about to come true—man was to walk on the Moon.

During the ninety-three hour countdown technicians prepared the booster and spacecraft for launch on the 16th of July. One by one the items on the several hundred pages of the countdown check list were ticked off and soon the countdown reached T minus 10 seconds. The countdown went on "10-9-8 - all systems go - the engines are running - 3-2-1-0". Slowly, the 8 185 million Saturn V rocket lifted off the launching pad. The booster used 15 tons of fuel every second to put the Apollo 11 spacecraft, containing Flight Commander, Neil Armstrong, Lunar Module Pilot Edwin Aldrin and Command Module Pilot Michael Collins, into Earth orbit. After 2½ hours of Earth orbit, the unused third stage of the booster was fired, rocketing Apollo 11 on its way to the Moon.

On the 19th of July, Apollo 11 went behind the moon. Contact was lost because radio waves cannot travel through the moon. There was great suspense on the earth "Had Apollo's engine functioned properly and thus put the craft into Lunar orbit" was the oft-repeated question. Finally, Armstrong's voice broke the silence "Apollo 11 here LOI (Lunar orbital injection) achieved. I repeat...Apollo 11 was in lunar orbit.

At 6.27 p.m. on the 20th, Aldrin entered the 8.41 million Lunar Exploration Module (LEM) "Eagle" and was followed by Armstrong twenty-five minutes later. At 11.27 p.m. Eagle separated from the 8.55 million Command Module "Columbia", leaving Collins in lunar orbit. Eagle lost height steadily and when it was 1000 feet above the surface, it was cleared for landing. The craft swooped down to within 200 feet of the surface, then descended vertically like a helicopter. Armstrong reported: "Tranquility base here, Eagle has landed". The time was 1.48 a.m. on July the 21st. Eagle was thirty-nine seconds late.

Immediately after touchdown, Armstrong and Aldrin readied Eagle for take-off in case they had to leave the moon unexpectedly. Then after a four-hour rest, they donned their space-suits for the historic walk on the lunar surface. The hatch was opened; Armstrong slowly climbed down the ladder, stepped on one of the footpads of Eagle's landing gear, and activated a T.V. Camera.

Finally at 8:16 a.m. Armstrong tentatively stepped on to the lunar surface. His words "That's one small step for man, one giant leap for mankind" went down in history. Moments later he picked up a sample of lunar soil. Armstrong was joined a while later by Aldrin, and together they spent nearly three hours scouring the rugged moonscape 150 metres around the craft. They assembled a panel to detect the presence of inert gases, a very sensitive seismometer which records moonquakes and a laser reflector which would enable scientists to measure the distance between the Earth and the Moon to six-inch accuracy. They also collected about two pounds of lunar samples.

Armstrong and Aldrin, who had come "in peace of all mankind" set up the American flag, spoke to their President Nixon and unveiled a plaque attached to one of the legs of the descent Eagle. They left behind the medals of the five men - two Russians and three Americans - who had died while blazing the trail to the moon.

The soil, according to Armstrong, was fine and powdery. The surface was soft but it was a very cohesive material. He said that his feet sank only one eighth of an inch into the lunar dust. There was a strange, though not complete, absence of colour.

At about 11:00 p.m. the Astronauts reported that they had returned to Eagle and that the cabin was pressurized. At 11:24 p.m. the ascent stage of Eagle blasted off the moon and a few minutes later was in orbit. Redocking gave a little trouble and was completed three minutes behind schedule. Two hours after redocking as Columbia came around the moon again, its engine was fired, sending Columbia hurtling back to Earth.

Apollo 11 re-entered the Earth's atmosphere at a speed of over 24,000 miles per hour. The outside temperature of the craft, which splashed down

within seconds of schedule on the 24th went over 5,000°F. Biological suits were handed to the astronauts, who were hauled into the quarantine chamber aboard the U.S.S. Hornet. The astronauts were kept in quarantine in case they were carrying moon germs which could harm life on earth.

The Apollo 11 flight was over. Scientists said that the knowledge gained from the flawless flight compensated for the \$ 355 million spent on the flight and indeed for the whole \$ 25.6 billion spent on the U.S. Space programme. And now what next : Another manned moon landing was accomplished in November 10th with perfect success. More ambitious projects are the setting up of an orbiting station and landing Man on Mars by the end of the century. But whatever of the future, history has been created now—in the present, Man has walked on moon.

S. Gulati Class XI

## *Indian Everest Expedition 1965.*

As the story goes Shri Radhanath Sikdhar, Chief Computer of the Survey of India after a series of calculations in 1932 jumped out of his seat with excitement when he found out that Peak XV (The local name of this peak 'CHOMOLUNGMA' meaning Goddess mother of wind was probably not known to the surveyors then, so they gave this non-de-plume) was found to be the highest mountain in the world. The peak was named after the then Surveyor General of India, Sir George Everest, who had done remarkable work in the survey of the Himalayas. Seventeen unsuccessful attempts were made to climb this peak since 1921. This led to the discovery of the new route to scale this peak via the South-East ridge in Nepal. Each team gained from the experiences of the past climbers and they climbed, as it were, on the shoulders of their predecessors. The British Expedition led by Sir John Hunt was successful in scaling this peak in 1953. Eleventhirty on the afternoon of May the 29th, was a great event in the annals of human adventure. Sir Edmund Hillary, a New Zealander and Shri Tenzing Norgye, an Indian from the Sherpa community on this day reached the top of Mount Everest. This success had not come easily. It was the 7th British attempt and several climbers including Mallory and Irvine who have become legendary figures in mountaineering, had lost their lives making gallant attempts to climb this peak. Although the great mystery about this peak was known to the world yet the adventure of climbing this peak still continued. Every fresh attempt on Everest involves new problems due to the ever-changing shape of the icefall, making of new routes on the snow, ice and rock and watching weather conditions. The lure of Everest continued and other nations took up the challenge. The Swiss in 1956 were successful in sending two groups to the top and the Americans followed in 1963 in sending three more groups to the top-one of them was via the new West Ridge route. Indians were inspired by the success of Shri Tenzing Norgye and this provided a great incentive to mountaineering as an organised sport in India. It was due to the keen interest taken by late Shri Jawahar Lal Nehru, Prime Minister of India and the late Chief Minister of West Bengal, Dr. B.C.Roy,

that the Himalayan Mountaineering Institute was established at Darjeeling in Nov. 1954. After 1965 the Nepal Govt. put a ban on all foreign expeditions in Nepal. This has been recently lifted. The Japanese are planning to scale this peak in 1970 and in 1971 an International Expedition is attempting it.

The Indian success in Cho Oyu (26,750 ft.) in Nepal in the year 1958 when late Shri Sonam Gyatso (oldest man to have climbed Everest at the age of 42) and Pasang Dawa Lama were successful in climbing the summit, gave great confidence to the Indian climbers to make attempts on the major peaks. The first Indian attempt on Mount Everest was made in 1960 when the team led by Brigadier Gyan Singh missed the summit by just about 700 ft. owing to adverse weather. The second Indian attempt in 1962 under the leadership of late Major John Dias, also narrowly missed the summit by only 400 ft. again due to bad weather.

The story of India's third and successful expedition to Everest began on the 15th August 1964 when the Sponsoring Committee of the Indian Mountaineering Foundation, New Delhi, announced the selection of Commander M.S.Kohli as leader and Lt. Col. N.Kumar, now Principal of the Himalayan Mountaineering Institute, Darjeeling, as Deputy Leader. After six months of careful preparations the team finally started off from New Delhi on Feb. 22nd, 1965. Most of the equipment was manufactured by the Indian Defence Ordnance factories. Besides this they provided a number of instant foods, i.e., pre-cooked rice, dal, paratha, meat, vegetables and other food items which were immensely liked by the team members at the high altitude camps due to their lightness and high nutritive value. Four days later they started their month long trek from Jaynagar, a small town in Durbhanga District on the Nepal-Bihar border. About 20 tons of food and equipment were carried by over 500 porters—nearly one third of them were women—who were as sturdy as the men. The team consisted of 19 members including 15 climbing members, two doctors and two wireless operators. In addition one Nepalese Liaison Officer, Lt. Rana joined the team. Fifty sherpas had been recruited to assist them at high altitudes with Ang Tshering as Sherpa Sirdar and Phu Dorjee as Deputy Sirdar.

The trekking in the lower Nepal hills was most enjoyable with its beautiful scenes of terraced fields and forests spread over huge mountain

7th. Boys back in Class. The I.S.C. results arrived—21 in 1st Division; 13 in 2nd Division and 2 in 3rd. All passed. Congratulations to the Staff and boys.

18th. Penics for the various Classes are being held during the week.

22nd. Mr. R.C. Tewari, the Inspector, examined some of the Classes today.

23rd. The Inspector concluded his examination of the School today.

29th. Rev. Br. Pakenham left today for his holiday in Ireland.



## MAY

1st. May day was heralded with hail, sleet, thunder and lightning.

2nd. Another cold, wet day.

3rd. Dr. Zakir Hussain—President of India passed away peacefully at 11.20 a.m. today.

6th. Bro. Laoran and O'Neill arrive for the holidays. It is a cold, wet, evening.

10th. Br. Moynihan arrived today with the Delhi Brothers.

13th. Bro. Brogan and O'Keefe arrive.

14th. Sports' Week commences with Lt. Col. D. Hyde, M. Vic. taking the salute and the oath by the athletes.

17th. Some more holiday Brothers arrived today.

23rd. The Convent held their Sports today. They were blessed with a glorious day.

24th. St. Joseph's Sports' Day. Shri S. S. Ahmad I.A.S., District Magistrate, Naini Tal presided and Mrs. M.A. Qasabhi very kindly gave away the prizes. Boys leave for their Sports' Holidays.

31st. Rev. Fr. Timothy C.S.S.R. arrived today to give the boys their lectures.



slopes with dots of houses connected by long narrow roads seen from great distances. The winter was at an end and the weather was pleasant. The people were most hospitable. At every village they were very helpful in providing the team with fresh supplies of milk, milk products, fresh vegetables, eggs and chicken. Every day after trekking about 10-12 miles the team camped in new surroundings. This in itself was a memorable experience. The team halted at Thangboche (13,000 ft), the heavenly monastery near Everest and received the blessings of the incarnate Lama before they resumed their climb. On March 22, exactly a month after they had left Delhi they reached the Base Camp at the height of 17,800 ft. The party was now on the Khumbu glacier. After a day's rest, they were up early to make a route in the ice-fall, the first and main hurdle on the way to Everest. Towers of ice of various shapes threatened to tumble down at any moment with a thunderous roar. There were crevasses (long cracks on the ice) They used logs and aluminium ladders to bridge the crevasses and ropes and rope ladders to make the steep slopes on the ice safer for the climbers. It took them four days of hard work on ice before they were on the top of the ice-fall, which they reached on 27th March. They were now in the Western Cwm of Everest 'The Valley of Silence' as the Swiss had called it. Compared to the ice-fall which presented a constant danger to life, the Western Cwm was safer. It had a gentle slope covered with layers of fresh snow with some hidden as well as open crevasses. The party spent about a week in establishing their Advance Base Camp at 21,200 ft. and Camp III at 23,000 ft. Later they had to face the second big hurdle, the Lhotse face which rises abruptly above the Western Cwm to 26,200 ft. high South Col. The first to the South Col (Camp V) reached it on April the 16th. The team had earlier established Camp IV on the Lhotse face at a height of 23,000 ft. The climbers were now ready for the crucial phase of the climb. Summit teams were named. It was the first time in the history of an Everest adventure that a summit attempt was being launched so early in the season. If all had gone well the first party would have reached the summit on the 27th April. But the weather turned bad and threatened even the stay of the climbers at the higher camps. All the climbers withdrew to the Base Camp and waited for the good weather. The bad spell of weather continued unexpectedly for a very long time until the middle of May when the weather at last improved. The weather fore-casts of All India Radio also indicated fair weather for the following few days.

The time had now come for the climbers to try again. The establishment of the last camp as high as possible was the third and last major hurdle. The team was successful in having this achieved at the height of nearly 28,00 ft. The climbers used oxygen beyond Camp IV (25,000 ft) while others used it beyond South Col. The team succeeded in sending nine "Summiters" in four summit parties to the crest of Everest (29,028 ft) situated on the North-East part of Nepal on the border of Nepal and Tibet, two (Nawang Gombu and Capt. Chocma) on May the 20th, another two (Sonam Gyatso and Sonam Wangyal) on May the 22nd, two more (C.P. Vohra and Ang Kami) on May the 24th and three (Phu Dorjee, Capt. Ahluwalia and H.C.S. Rawat, the writer of this article) on May the 29th.

This was the success which was shared by the entire team. Behind this success lay the great leadership provided by the Indian Mountaineering Foundation and the Himalayan Mountaineering Institute, Darjeeling. On May the 31st, the Expedition was safely back at the Base Camp to celebrate their success. The Indians went to this peak not with the feeling of conquering it but as pilgrims to the abode of Gods. The team had no major injury or accident during the climb for which they expressed gratitude to Almighty God.

H.C.S. Rawat

# *The Function and need for Arts*

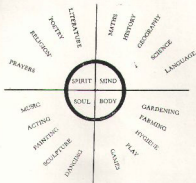
In a world in which science has become synonymous with knowledge, and in which the accepted methods of logical analysis cannot admit the relevance of insight or sensibility, it has become increasingly difficult to define the function of art. One can make a virtue of its uselessness, as did Oscar Wilde. But art persists, both as historical phenomenon which resists all purely materialistic explanation and as a present activity in which all healthy children and a few adults naturally indulge. The suspicion that art serve some biological purpose has been growing. That art has wider functions of a social kind is also a possibility, and we might even echo the Prophet and proclaim with good historical evidence, that a people without art shall perish.

In School and clinic, in hospitals and workshops, a good deal of experiment and observation is now taking place, not to demonstrate the usefulness of art, but thinking that art is an essential activity which develops skill and grace, which integrate eye and limb, and which when given full scope, induce a natural bias towards moral virtue. There is even evidence which suggests that art can reform the brutalized mind of the criminal.

At this time of worldwide moral breakdown, against which neither the teaching of religion nor science and technology or material plenty seem to avail, it might be wise to give the arts, which speak the language of the heart, a chance to exercise their binding and civilising power and to persuade mankind to put aside fear and hatred.

The purpose of education should be the development of the whole human being. No parts of it should be advanced at the expense of others. Yet during the past decades the physical and mental advance of man has been more rapid than his spiritual and emotional growth, and we must now do what we can to right the balance.

Most religions and philosophies agree in dividing man into the four components of body, mind, soul and spirit. Now-adays, we are developing body, mind, and to some extent spirit and neglecting soul.



The Diagram shows which subjects serve to cultivate the chief parts of the human personality.

It is said that the practice of Art and Crafts not only brings us into direct contact with wealth and variety of forms of life, but it provides at the same time a healthy discipline and fine morale.

In visual art, line or composition usually denotes the way in which the various cosmic elements are selected. Colours call up a different scale of feelings. We need not investigate here whether the emotional values attached to different colours derive from association or from deeper physical causes. But it is certain that choice of colour forms a most subtle indicator of temperament and mood without entering into controversy.

It is safe to say that all dark, brown and violet colours produce an effect of sadness and seriousness, and all light and primary colours one of the brightness, gaiety and joy.

The temperature values of colour, the warm and cold colour which Painters range on opposite sides of their palettes, also have a definite effect on the human psyche.

The subject is a complex one and open to misunderstanding. Here I want to say only that the above is not just my personal ideas but gleanings from the great Masters, the study of whose works has helped me to form my convictions.

One thing I must add is that it is my personal conviction that art and crafts are the best educators, good moral makers and healers of men.

We held our Art and Crafts exhibition in St. Joseph's during the first week of October. We were highly honoured by visits of the children and staff of the Sherwood College, All Saints' and Ramnee Convent. The appreciation they expressed gave us encouragement to do better in the future and we thank them for coming. Later on in the month we were able to put on another show in the Municipal Library but by this time almost all the visitors had gone back. We wish to thank all those boys who devoted so much of their precious time in making our art exhibition such an attraction.

Mrs. Yasmeen Tahir.

# *Archbishop Angelo Poli, O.F.M. Cap*

*(1878—1970)*

The soul of Archbishop Poli winged its way peacefully to the abodes of bliss above on 3rd January 1970.

Archbishop Poli was born in Italy at Casola Valsenio in the diocese of Imola on September 13th 1878. He was consecrated Bishop of Allahabad in 1913. In 1947 Archbishop Poli retired from the scene of his labours and went to live at St. Joseph's Home in Jodhpur, where he died.

During his time in Naini Tal he was a Chaplain of St. Joseph's. In later years during his retirement at Jodhpur he loved to have the Brothers and boys call on him. His memory was fresh and he was able to recall incidents that took place in the College during his years in Naini Tal. He was fond of enquiring about all the Brothers whom he knew and it was his greatest joy when he heard that we had opened a school in some place or that we had got more Brothers. His love for the children showed itself in the interest he took in them. Never did any of the boys who called to see him, leave him without receiving sweets or fruits and always a kind word "Call again when you can." Many of the old boys still enquire about him from as far away as Canada, England and Africa. Even to the very last he kept up correspondence with boys and it was noted that all the letters he received got a reply by return post.

It would be well nigh impossible to summarise in a short space of this magazine all the work he accomplished in 69 years of missionary life. During his Episcopate 28 schools including 8 orphanages, 37 Churches and Chapels, several homes for the aged, dispensaries, presses and information centres were all opened by his patience and self-sacrifice and they stand as monuments to this great prelate. These monuments often hide the true personality of this great man. Archbishop Poli's life was a life of faith and prayer. This was further increased when he retired to Jodhpur. He was

known to spend at least seven hours a day to prayer. His life was truly "hidden in Christ with God". He followed a strict routine throughout his entire life. His life was an inspiration to all of us who had the pleasure of knowing him. The Diocese is the poorer for his death but we know that he looks down on his children to help them in their trials in life.

Lives of great men all remind us,  
We can make our lives sublime  
And departing leave behind us,  
Footprints on the sands of time.

May his dear soul rest in the peace of Christ.

## शांति की खोज

जाता संस्था, दिवस-रात्रि वह शांति की खोज में चलता जा रहा था। शांति को पाना, केवल यही एक लगन उसके हृदय में थी। वह संसार से प्रायः नज़ा हो चुका था। गली-गली, कुचा-कुचा, घाम-मगार उसमें एक बार दिने के किन्तु शांति उसके निकट नहीं फटक रही थी। पर फिर भी वह निराशा नहीं हुआ था, उसे आशा थी कि एक दिन वह अपने लक्ष्य तक पहुँच पायेगा। इसी लगन व इसी आशा के वह निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान को चलता जा रहा था।

वह एक चुनक था किन्तु इस सामाजिक संसाराल एवं अथक कार्मिक परिश्रम ने उसको एक बड़े मनुष्य में बदल दिया था। इसने पर भी उसकी शांति की खोज जारी थी। सुकह होते ही उसकी आशा फिर से जुका हो जाती थीर दिन भर मटकने के बदलाव ओ-ओ शांति निकट आती वह आशा में डल जाती। किन्तु फिर भी वह साहज्य छोड़ने वाला न था और दूसरे दिन प्रसात का प्रकाश देखते ही वह अपने लक्ष्य की खोज में निकल पड़ता।

उसमें सुना था कि शान्ति मिलती है सकुलित की ओर में, शान्ति मिलती है निर्जन वन-वागरी में, सपन पनों में, शान्ति मिलती है तीर्थ-स्थानों में, मन्दिरों में और वन-समागम में, शान्ति मिलती है हिमालय की शीतलता में, पर्वतों की ऊँचाइयों में, वहाँ के प्रपातों में, निर्मली में, सरिताओं के बिजारी वर, खरीबों के बटो वर। इसी आशा व विश्वास के साथ वह पुनः उठा और चल पड़ा, रातनाओं और कटोरी की लजिह भी परवाह किये बिना, और कमाया तीर्थ-स्थानों, पनों और पर्वतों में पहुँचा। वहाँ की प्राकृतिक सुपना से उसके नेत्र सकुलित हुए, प्राकृतिक सौन्दर्य का विलास हृदय पर छाया किन्तु शान्ति ? नहीं, वह नहीं मिली, आत्मा चुनचुड़ी रही। साधु संगति की वर वहाँ भी आह्वान व अन्ध मरिह का प्राधान्य देख कर वह और भी दुखी हुआ। इसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर वह बढ़ता रहा पर शान्ति के बदले उसका लोभ ही बढ़ता रहा।

इस अंत-हीन, विनाश-हीन यात्रा ने उसे कार्मिक दुर्वल बना दिया। उसकी समस्त इन्द्रिय जवाब देने लगी। मस्तिष्क ने कार्य करना छोड़ दिया। केवल विचारों के बवंडर उसके निराश हृदय पर उठने लगे। किन्तु कमसे कम किया था कि वह अपने लक्ष्य तक पहुँचता, अपना इष्ट प्राप्त करेगा, अपने उद्देश्य में सफल होगा, विजयी होगा अन्यथा प्राण त्याग देगा। और वह पुनः चल पड़ा परन्तु उसके शरीर ने अब चलने से इनकार कर दिया और राह में एक घाम के निकट वह काँड़ मूर्ति हो गया। उस से उसके शरीर का ताप-मान शरम-सीमा तक पहुँच गया। उस से उसका पेट भूखने लगा किन्तु उसमें इसकी सामर्थ्य नहीं रही थी कि निकट के जल-स्रोत के पास पहुँच कर लूना शान्त कर सके। वह मूर्तिन अवस्था में केवल अस्थिर अग्नि में वद्वदता रहा था, सपु के पग उसकी ओर बढ़ते जा



रहे थे। तभी उस रात से गुजरती हुई एक घाम-बधू की दृष्टि उस पर पड़ी। एक पक्षिक को इस अवस्था में देख कर उसका सदन मातृ-हृदय वसीत गया। वह पक्षिक के निकट पहुँची। पक्षिक अन्तिम साँस लेता हुआ पड़ीत होता था। घाम-बधू गुरगुर पाव के जलाशय से अपना आंचल मिमी लाई और उसके मुख में उसे शिथोड़ कर डाला, मुँह पर छीरे दिये। पक्षिक ने आँसो खोकी। किन्तु पुनः मूर्छित हो गया। घाम-बधू गाँव से कुछ अन्ध लोगों को बुला लाई। सरल-हृदय मानवीय उसकी सेवा-शुभूषा में लग गये। गाँव में जे जाकर उसकी मृत्त सेवा-दहल की।

तीन दिन के परचात उसकी मूर्दा दूरी और उसने शव्य को एक घर में घासीली से धिरा बाधा जो उसकी सेवा में लीव थे। एकाएक शान्ति की शीतल किरण उसके अशान्त, लुब्ध हृदय में प्रवेश करती सी पड़ीत हुई। बीरे-बीरे वह स्वस्थ होने लगा और उसे अनुभव होने लगा कि जिस शान्ति को खोज में वह अब तक यत्र-तत्र महकता धिरा, वह तो मानव-सेवा में पूर्णरूपेण विद्यमान है। दीन-दुखियों की सेवा और उनसे प्रेम करना ही शान्ति का मार्ग है, उसके ज्ञान-बधू खुज गये। जिस शान्ति की उसे तलाश थी वह उसे मिल गई थी। वह बहुत प्रसन्न था। अपनी जीवन-रक्षिका घाम-बधू को उसने प्रणाम किया और सरल-मोते, फूल से बासकी से बर्त कराने लगा। वह पुनः संसार में लौट आया था।

## समय की महत्ता

ज्वाला बाबू बनवान तथा उंचे घराने के कबलित थे। उनके पास कभी तरह के भौतिक सुख थे। इस कारण उनका जीवन ऐशोशराम तथा आनन्दपूर्वक व्यतीत हो रहा था।

लेकिन किसी भी मनुष्य का जीवन कभी सुखियों में ही नहीं बीतता। वैसे किसी दिन हम से भी रिश्ता जोड़ना पड़ता है। उसके जीवन में एक दिन ऐसा भी आता है जब उसकी सुखी में बाधा पड़ जाती है और उसे कष्ट भोगना पड़ता है तथा अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही वंश एक रोज ज्वाला बाबू की हुई।

एक दिन वह अपने साठवें पुत्र की सासगिरह बना रहे थे। इस अवसर पर कई सम्मानित लोग आमंत्रित थे। कहीं पुन-धाम से पार्टी हो रही थी। अचानक मयानन्द भूषाहा आया और अपने साथ बरबादी भी लाया। ज्वाला बाबू की सुखियों रानी में बदल गई। रंग में भंग पड़ गया। अब भूषाहा ने उनका सब कुछ उजाड़ दिया।

जहां कभी एक विशाल महल था, वहां अब खंहरों के मिषाब और कुल न रहा। माध्य में ज्वाला बाबू से उनकी प्रिय पत्नी भी छीन ली। उनका लाइला बेरा, जिसने उनकी दुनिया में आनन्द की फुलमदियां छोड़ी थीं, वह भी अब उनके जीवन से सदा के लिए चला गया।

प्रकृति ने उनके साथ एक बड़ा खूब उच्छ्वास दिया। जो किसी समय करोड़ों रुपये के मालिक थे, वे अब एक मिश्रुत की मॉति शहर की गलियों में घूमने लगे। उनका कोई महार न रहा। जिसने ज्वाला बाबू की सुखियों में उनका साथ दिया था, वे अब उन्हें ठुकराने लगे। कैसा वेदव जमाना है। जब तक किसी के पास पत रहता है, तब तक उसका सब साथ देते हैं, परन्तु विपदा के समय हमें छोड़ देते हैं।

इससे प्रतीत होता है कि वस्तु कितना बदल है। हम सभी इसके गुलाम हैं। वह जब चाहे हमारे जीवन में सुखियां ला सकता है, और जब चाहे विपत्तियां। इसीलिए तो कहा गया है कि मनुष्य की कंक से डर कर रहना चाहिए।